शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 9 | उदयपुर सोमवार 15 मई 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोकसंस्कृति की विरासत

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

लोकसंस्कृति हमारी जीवन-शक्ति है। इसके प्रति लोक की अटूट आस्था, अटूट विश्वास और अटूट जुड़ाव होने के कारण यह परंपराशील है। परंपराशील है इसलिए प्रवाहमयी है। प्रवाहमयी है इसलिए प्रयोगधर्मी है। प्रयोगधर्मी है इसलिए पर्यावरणीय है।

प्रकृति और मनुष्य के बीच जो सत्व और सत्य उद्घाटित है, सनातन संबंधों का जो सुखद सौंदर्य सुवासित है, उसी का निकट और नैकट्य संस्कृति की सुघट आत्मा है इसलिए उसके माध्यम से मनुष्य नानाप्रकार के राग-रंग, त्यौहार-उत्सव, संस्कार-सरोकार तथा आनंद-अनुरंजन से रस-प्लावित होता है। वह अपने को कभी उदास, निराश, हताश, एकाकी और पराजित महसूस नहीं करता। अजेय उत्साही, उल्लसित तथा कर्मशील बने रहकर सार्थक जीवन जीने की संजीवनी पाता है।

इसलिए हमारे यहां जीवन ही ज्योतिर्मय नहीं है, मृत्यु भी महोत्सव है। यह जीवन और वर्तमान ही वैशिष्ट्यपूर्ण नहीं है, भविष्य और भव-भव का जीवन निरर्थक न हो, इसके लिए मनुष्य धर्म की आराधना करता है। पापाचार से डरता है। शुद्ध आचरण एवं सात्विक विचार की अनुपालना में अपने चित्त को रमाये रखता है। तीर्थाटन करता हुआ वह विविध प्रकार के देवी-देवताओं, भांति-भांति की पवित्र नदियों तथा साधनारत संतों, आचार्यों एवं महामानवों का सान्निध्य, सत्संग एवं शुभ-लाभ लेता है। सुखद यात्रा के लिए पथरक्षिका पथवारी माता का पूजन करता है और सकुशल लौट आने पर गंगोज भरता है।

जनम-परण तथा मरण की त्रि-धारा में मनुष्य कई संस्कारों से अनुप्राणित हुआ संस्कृति के विराट चैतन्य का वैभव समेटता है। संस्कृति की अंत:सलिला का ओज और ऊर्जस्व अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ने की विरासत को विवेकपूर्ण आत्मसात् के साथ हृदयंगम कर मनुज मानवता की आराधना में खो जाता है।

यह संस्कृति विविधरूपा है। समष्टि स्वरूपा है। समष्टि भाव के कारण ही सारे भेद-अभेद में और द्वैत-अद्वैत में परिवर्तित हुए मिलते हैं। व्यक्ति अपने लिए नहीं जीकर समग्र समष्टि के लिए जीने लगता है। इसी कारण यहां का मानव सहअस्तित्व तथा सामुदायिक भाव-बोध लिए फलता-फूलता पल्लवित होता है। वैदिक ऋषियों के मंत्रों में यही भावना बलवती हुई है जिसमें कहा गया है- हम एक-दूसरे की रक्षा करें। प्राप्त साधनों का साथ-साथ उपयोग करें। हमारा अध्ययन तेजस्वी हो। हम परस्पर द्वेष न करें। साथ-साथ चलें। साथ-साथ रहें तथा एक-दूसरे के मन को जानें।

आस्था के इसी संबंध की दृढ़ भित्ति के सहारे यहां का लोकजीवन अपने समग्र रूप में भाग्य और भगवान का भरोसा लिए निश्चत, कर्मशील बना कठोर जीवनयापन का अभ्यासी है। बुद्धि के वाग्जाल में उलझने की बजाय वह होनी-अनहोनी के लिए पारंपरिक विश्वासों और शकुनों के सहारे जीता है। प्रसंग चाहे किसी शुभ कार्य के प्रारंभ करने का हो या किसी कार्य से घर से बाहर जाने का हो, उसके सामने शकुनों का पिटारा खुल जाता है। गाथा और गीतों का समृद्ध भंडार ऐसे लोकविश्वासों से भरा पड़ा है।

किंतु समय की धार सदैव एक सी नहीं रहती। कोई समय ऐसा आता है जब जीवनचक्र से जुड़े पारस्परिक सरोकार, आस्था, विश्वास एवं संस्कृति के सेतु डगमगाने लगते हैं। आशा तो यह बंधी थी कि आजाद होने पर हम अपनी पारंपरिक उपलब्धियों तथा समृद्धियों को और अधिक सुरंगे रूप में शोभित कर सकेंगे किंतु मनुष्य समष्टिनिष्ठ की बजाय व्यक्तिनिष्ठ ही अधिक हो गया जिससे वह अपनेपन में ही आत्मकेन्द्रित हो गया।

संस्कृति का जो विराट स्वरूप, विस्तार पाया वैभव तथा अखंड विहार था वह संकुचित, सीमित, विकृत तथा विवादित होता हुआ कई पैबंदों, मुखौटों एवं भौंडे रूपों में परिलक्षित होता नजर आया। ऐसी स्थिति में कई चुनौतियां हमारे सम्मुख फन फैलाए खड़ी हैं और आदमी ज्यों-ज्यों अपने में राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय उजास की अलख भरता जाएगा, यह संकट और अधिक गहराता जाएगा। आवश्यकता है, हम अपनी फसल, रौनक तथा पाये को पहचानें तथा उसके सहारे अपनी जीवन-संस्कृति को सुवासित कर उसका संरक्षण करें।

संस्कृति का परिवेश नैसर्गिक परिवेश है। उसकी संरचना, संचेतना और संस्कारशीलता को उसकी अपनी आधारशिला, आत्मीयता, अंतश्चेतना तथा ऊर्जा में प्रकाशवान होने देना ही उसकी असलियत तथा मूल एकरूप का संरक्षण है। बदलते परिवेश में उसकी नैसर्गिकता को खोकर हमने उसमें प्रति ज्यादती ही की है। उसे विविध सेमीनारों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में ढालकर तथा शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर प्रयोगधर्मी बनाने में कोई कसर नहीं रखी। इससे उसका आत्म चैतन्य प्रदूषित ही अधिक हुआ है। अपनी निज की शर्तों के अनुरूप गमले में गेहूं उगाकर परखनली में शिशु पैदा कर, मौसमी चीजों को बेमौसमी कर तथा टेलीविजन के विजन के साथ समझौता कर संस्कृति एवं कलारूपों की अदला-बदली करने में कोई कसर नहीं रखी। इससे हमारे सांस्कृतिक अनुरंजन एवं उल्लास को बड़ा धक्का लगा है।

-शेष पृष्ठ सात पर

एक तरफ वे लोग हैं जो इस अगम साहित्य, सहज संस्कृति और सुगम कला में अपना अनाम योग देते हुए बूंद को समुद्र बनाने में लगे हैं तो दूसरी ओर ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो लोककलाओं की खेती में असर-पसर गये हैं। हमारे यहां जीवन ही ज्योतिर्मय नहीं है, मृत्यु भी महोत्सव है। संस्कृति का परिवेश नैसर्गिक परिवेश है। संस्कृति के सरोकार समूहबद्ध और आंचलिक होकर ही प्राणवान बने रहते हैं। ग्रामीण जन समुदाय के समक्ष भोपे-भोपी द्वारा अब पड़-लीला का आख्यान गाया, बजाया, नाचा और अरथाया जाकर शुभ-मंगल की वर्षा नहीं करता। कला और संस्कृति के साथ दुर्भाग्य तब शुरू होता है जब लोग उसकी सार्वजनिकता का दोहन कर अपनी निज की पहचान देना प्रारंभ कर देते हैं। हजारों गीत गाथाएं हरजस साक्षी हैं कि व्यष्टि के सब वैभव होते हुए भी लोग समष्टि के लिए सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय बने हैं।

यदि ऐसा नहीं होता तो मीरां के पदों की संख्या में दिन-दूनी वृद्धि नहीं होती। कबीर के भजन निरक्षरों की महफिल में रात्रि जागरण के तंदूरों पर भक्ति रस की तन्मयता और ताजगी देते नहीं मिलते। आज कहां मीरां लिख रही है? कहां कबीर लिख रहे हैं? चन्द्रसखी या कि अणदा रैदास लिख रहे हैं! पर कमाल है उनके नाम पर आज भी लिखे जा रहे हैं और आने वाले कल भी लिखे जाते रहेंगे।

मायरा

-डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली-

मायरा या माहेरा शब्द का मूल मातृ-गृह या मातृ-घर होता है। मातृ-गृह-माइअर-मायर/ माहेर = माता का घर। 'मायर और माहेर से संबंधित' अर्थ में माहेर या मायरा शब्द प्रयोग में आते हैं। इसी तरह का शब्द पितृगृह से विकसित 'पीहर' है-पितृगृह-पिइर / पीयर / पीहर। वेद में कहा गया है- जायेदस्तम् अर्थात् जाया इत् अस्तम्- जाया ही घर है।

गृहिणी ही माता बनकर घर को किलकारियों से गुंजायमान, सब प्रकार से शोभास्पद, सजा-संवरा रूप प्रदान करती है। सारे मानवीय सम्बंधों में वही केन्द्र बनती है। इसीलिए महर्षि वाल्मीकि ने उसे मातृभूमि के समकक्ष मानकर स्वर्ग से बढ़कर गरीयसी कहा है- 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'

परिवार में कन्या का स्थान सर्वोपरि होता है। वह परिवार में सबकी लाडली बनकर प्रकट होती है। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम् में कहा है कि कन्या पराया धन होती है- 'अर्थो हि कन्या परकीय एव।' उस पराये धन को धरोहर मानकर पाला जा रहा हो, तब केवल माता ही इस कार्य में, जन्म देने से लेकर घर से विदा करने तक, सबसे अधिक सक्रिय रहती है। इसलिए मातृगृह या मायर को महत्व मिला है।

कन्या जब पतिगृह में चली जाती है और माता-पिता उसे उचित हाथों में सौंपकर संतोष प्राप्त करते हैं तब भी मातृगृह से उसका सम्बंध जुड़ा ही रहता है। इसलिए एक कन्या के संतान हो और उसका विवाह हो, तब मातृगृह ही उसके साथ खड़ा होता है। उसके मातृगृह से उसके आत्मीय जन भी आते हैं और वह सब लेकर आते हैं जिसे मायरा या माहेरा कहा जाता है।

बहिन को मायरा पहनाने के लिए भाई सपत्नीक जाता है। उसका स्वागत करने के लिए बहिन ढोल बजाती हुई गांव के 'कांकड़' (सीमा) तक जाती है। उसे घर लेकर आती है। बहिन और उसके परिवार को भाई 'पहरावणी' पहनाता है।

बहिन को चूंदड़ी ओढ़ाता है। कन्या के विवाह की रस्म मामा द्वारा प्रदत्त वस्त्र 'मामा झोळया' से होती है। वह प्राय: श्वेत रंग का होता है। उसके एक कोने पर हल्दी या रोली की टपकी लगा दी जाती है। इसका तात्पर्य जीवन में उत्साह और उमंग से नये-नये रंग भरना है। 'मायरा' में बहिन को भाई वस्त्र तो पहनाता ही है साथ ही मंगलसूत्र स्वर्ण या रजत के आभूषण भी भेंट करता है। सहयोग के लिए राशि भी प्रदान करता है।

कन्यादान के कारुणिक प्रसंग में जो व्यक्ति माता-पिता के साथ खड़े होते हैं, उनमें मामा और माता के घर की ओर से आए हुए सब सदस्य होते हैं जो विवाह के दिन कन्या के माता-पिता के साथ उपवास करते हैं। इसे 'खनाळ' अथवा 'कन्यावळ' कहा जाता है।

'कन्यावळ' का अर्थ 'कन्या की सेना' का प्रतीक होता है। मध्यकाल में जब विधर्मी कन्या को लूट लिया करते थे, तब उसका पितृपक्ष और मामा मिलकर उसकी रक्षा करते थे। यही उसकी रक्षक सेना होती थी। सुरक्षा की दृष्टि से विवाह रात्रि में होने लगे थे। अन्यथा दिवालग्न ही श्रेष्ठ माना जाता है। 'मायरा' पहनाकर जब भाई और मातृपक्ष के लोग लौटने लगते हैं तब बहिन भावविह्वल होकर विदाई देती है। कन्या की विदाई जैसा ही दृश्य होता है। जीवन की एक बड़ी जिम्मेदारी को निभाते समय मातृपक्ष से पूरा-पूरा सम्बल मिला और जो कुछ सम्पन्न हुआ, वह सबके सामने और परिवार की अपेक्षाओं के अनुरूप हुआ।

यह स्मरण करके बहिन के हर्ष और कृतज्ञता से मिश्रित आंसू रोकने से नहीं रुकते। वह मधुर जल पिलाकर और नारियल देकर सम्मानित करके सबको विदा करती है, पुन: ऐसे प्रसंग में आने का अनुरोध करती है। बहिन की मधुर मनुहार और प्रतिष्ठा की रक्षा 'जामण जाया वीर' कैसे करता है-यह प्रमाणित करता है मायरा।

स्मृतियों के शिखर (31) : डॉ. महेन्द्र भानावत

दो दिन बालकवि बैरागी के साथ (2)

उज्जैन की सांझी-संगोष्ठी :

अपने वक्तव्य में मैंने संगोष्ठी में भाग लेने को अतिरिक्त प्रसन्नता का गौरव कहा। कारण कि आज ही के दिन किंतु 51 वर्ष पूर्व, 25 सितम्बर 1960 को धर्मयुग में 'गुड़ गुड़ गुड़ल्यो गुड़तो जाय' शीर्षक से संझ्या पर मैंने एक आलेख लिखा था। तब डॉ. श्याम परमार ने मुझे सूचित किया कि पूरे मालवे और राजस्थान में सांझी के तीन-चार गीत ही मिलते हैं। उनके इसी कथन से प्रेरित हो मैंने राजस्थान के विविध अंचलों का भ्रमण कर सांझी के 50 गीत एकत्र किए और राजस्थान की संझ्या नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की। इसी सांझी पर बाद में मेरी बिटिया कहानी ने शोधप्रबंध भी लिखा।

बालिकाओं द्वारा गाये जाने वाले संझ्या गीत की मात्र एक पंक्ति 'खुड़ खुड़ से म्हारा खोड्या जमाई, थूं संझ्या ने लैवण आयो रे' के आधार पर मैंने मेवाड़ में गाई जानेवाली बगड़ावत महागाथा में वर्णित एक घटना प्रसंग को लेकर संझ्या को खोज निकाली। यही नहीं, उसे एक हजार वर्ष प्राचीन बता मेवाड़ से उद्भवित यह विरासत हरियाणा, पंजाब, मालवा, महाराष्ट्र आदि प्रांतों में अपना प्रसार देती हुई नेपाल तक जा पहुंची। इस दृष्टि से सांझी कुमारिकाओं के सुखमय जीवन का सौंदर्यमय श्रद्धानुष्ठान ही है।

बैरागीजी ने संझ्या को सुकन्याओं की कोमल भावनाओं की अभिनव परिणति कहा जो उनके भावी जीवन के सौंदर्यबोध को मंगल प्रदान करती है। उन्होंने सांझी को बालिकाओं का सुव्यवस्थित व्याकरण और अनुशासन कहा जिसके माध्यम से माताएं अपनी पुत्रियों को भावी गृहस्थ जीवन का सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं। संगोष्ठी को डॉ. निरगुणे, डॉ. सहगल, डॉ. शिव चौरसिया, डॉ. पुरु दाधीच, डॉ. जगदीश शर्मा, डॉ. गुलाबसिंह, डॉ. शैलेन्द्र तथा डॉ. पल्लवी ने भी वैचारिक समृद्धि दी।

तीन घंटे की यह संगोष्ठी विद्वानों के चिंतन-मंथन से बड़ी यादगार बन गई। इसी क्रम में रात्रि को अकादमी के संकुल हॉल में संझ्या लोकोत्सव का सांस्कृतिक कार्यक्रम था जो आकर्षक गीत-नृत्यों की प्रस्तुति से सराबोर रहा। प्रतिकल्पा की डॉ. पल्लवी ने इसे कई रंगों में खूबसूरती दी। संझ्या के गीतों से मंडित बालिकाओं की नृत्य प्रस्तुति सर्वाधिक मोहक रही। यह एक अभिनव प्रयोग था। इसी दौरान मालवी लोकगायक पद्मश्री हीरासिंह बोरलिया का सम्मान किया गया।

लोकगायक हीरासिंह से स्मृति भेंट :

कुछ तो उम्र के प्रभाव और कुछ बीमारी से जूझते पहले तो हीरासिंह मुझे पहचान नहीं पाये पर थोड़ा सा इशारा देने पर लपक पड़े और बड़ी देर तक पुरानी यादों को खंगालते रहे। बोरलियाजी ने जब लोकगीत गाना प्रारंभ किया ही था तब हमने उन्हें भारतीय लोक कला मंडल के लोकानुरंजन मेले में आमंत्रित किया था। यहां शानदार प्रस्तुति के कारण वे दूर-दूर तक जाने गये जिसका उल्लेख वे बड़ी देर तक करते रहे। उन्होंने यह भी कहा कि उसी के कारण ही उन्हें विदेश जाने का मौका भी मिला। बोरलियाजी जैसे कलाकार ही होते हैं जो बड़े होने पर भी अपने बड़प्पन में कोई कसर नहीं आने देते हैं।

यहीं रात्रि को बारह बज गई। शैलेन्द्रजी भी कम थके नहीं थे। इस समारोह के भी वे ही सूत्रधार थे। उज्जैन की ऐसी कई साहित्य-कला-संस्कृति नामी संस्थाएं हैं जिनसे शैलेन्द्रजी का आत्मीय जुड़ाव रहता है। उनका यह जुड़ाव उस धागे की तरह होता है जो किसी भी निर्जीव पुतली को चलायमान कर सजीव बना देता है। होटल में भोजनकर हम अपने-अपने डेरे में चले गये। शुभ रात्रि।

दूसरे दिन सुबह की चाय के साथ हमारा सुप्रभात शुरू हुआ। चाय पर ही डॉ. शक्तावत ने हमें मुम्बई से सितम्बर का प्रकाशित मासिक संस्कार का प्रवेशांक दिया। हमें अपनी सम्मति लिखनी थी। बैरागीजी ने पन्ना पलटते ही देखा कि संपादक कृष्णकुमार पित्ती ने संपादकीय के अंत में अंग्रेजी में हस्ताक्षर दे रखे हैं। उन्हें अच्छा नहीं लगा। तत्काल शक्तावत से फोन मिलाने को कहा। बैरागीजी ने उन्हें बेबाक सुना दी।

यहीं श्वेतमा निगम मिलने आई। अपने परिचय में उसने कहा कि वह झलक निगमजी की बिटिया है और 9 अक्टूबर को उनकी पहली बरसी पर आयोजित समारोह में हमारी उपस्थिति चाहती है। पूर्व में हम जब भी उज्जैन आए, झलकजी हर समय हमारे साथ रहे। उनके कविता संग्रह भी निकले हैं और उन्होंने एक समारोह में अपनी कविताओं से हमें रसमग्न भी किया था। वे मालव माटी की लोकाभिव्यक्ति के सधे हुए पारखी और अनुभवी चित्त के सरलमना सुकवि थे। पूरनजी ने ही मुझे उनके निधन की सूचना दी थी। मैंने श्वेतमा से इस तिथि की अनुकूलता नहीं होने की माफी चाही।

साढ़ा नौ बजे हम अपने कमरे से बाहर निकल आये। डॉ. शैलेन्द्रजी और उनके अग्रज डॉ. जगदीशजी से बड़ी देर तक सृजन, प्रकाशन, शोध जैसे मुद्दों पर होटल के बाहर खड़े-खड़े ही दिलचस्प चर्चा होती रही। दरअसल हम परिकल्पा के सदस्यों की प्रतीक्षा करते रहे कि उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करें और अच्छी संगोष्ठी तथा सांस्कृतिक आयोजन की सफलता से सुविदित करें मगर हम निराश ही हुए। करीब दस बजे हमने उज्जैन छोड़ दिया।

उज्जैन से प्रस्थान :

बैरागीजी का यह सौभाग्य रहा कि वे तीनों सभाओं के सदस्य रहे। देश की लोकसभा, राज्यसभा तथा प्रदेश की विधानसभा में उनकी प्रशंसनीय तथा सकारात्मक भूमिका रही। दल बदलने के दलदल में वे कभी नहीं फंसे। वे पूरे तन-मन से कांग्रेसी रहे किंतु पार्टी को उन्होंने कभी धंधा-पानी नहीं बनाया। कविता को संस्कार और राजनीति को एक नीतिगत व्यवस्था मानते हुए उन्होंने जीवन के विधि विधान को संवैधानिक जनशक्ति से जोड़ा। उसका प्रभाव यह रहा कि पार्टी से भी ऊपर वे अपनी छवि बनाने में सक्षम लोकप्रिय हुए।

दो दिन के उनके साथ के यात्रा-प्रवास के दौरान वे जहां भी जिससे भी मिले, बातचीत की, उनकी मैत्री, भाईचारा, आत्मीयता तथा अजीजता का उमड़ाव ही देखने को मिला। राजनीति की गंध-सुगंध और नेताई आचार-दुराचार से कोसों दूर वैरागीजी का शुद्ध मानस रूप साहित्यजीवी का स्नेह-सरोकार पा कवि-हृदय की संवेदनशीलता का कमल-सरोवर ही किल्लोल करता रहा।

टेक्सी अपनी गति में चल रही थी। मैंने पूरनजी से पूछा, मोबाईल पर बैरागीजी से कौन बात कर रहा है? जाते समय भी किसी शब्द का अर्थ बता रहे थे। किसी कविता पंक्ति का भावार्थ समझा रहे थे और अभी भौगोलिक जानकारी दे रहे हैं। वे बोले, कोई रवि नाम का लड़का है जो ऐसी जानकारी लेता रहता है। मैंने कहा, नजदीक का ही कोई समधी होगा, सुनते ही बैरागीजी बोले, यह सिंगोली में अध्यापक है। बहुत ही सीधासाधा और भोला मगर जिज्ञासु। पढ़ाते समय इसे जब लगता है कि बच्चों को अधिक जानकारी देनी चाहिए तो फोन खड़खड़ा देता है। पूरन बोले, दादा आपके नाम को कहीं... बात काटते ही बैरागीजी ने कहा, अरे नहीं बाबा, मामूली सा अध्यापक है इसीलिए मैंने जब कहा कि मैं उज्जैन से चलकर मंदसौर के आसपास हूं और मेरे साथ तीन-तीन पीएच.डी. डाक्टर हैं। यों किसी भी समय वह फोन कर लिया करता है। जब मैं अपनी पत्नी के शव को कंधा दिये चल रहा था तब भी मैंने इससे बात की थी।

बैरागीजी का पोस्टकार्ड :

बैरागीजी का जीवन सदा ही सकारात्मक ऊर्जा लिए रहा। अकारात्मक-नकारात्मक समय में भी वे बेविचलित सकारात्मक ही बने रहते हैं। वे छत्तीस के तीये-छक्के (36) से दूर छक्के-तीये (63) के विश्वासी बने रहे तभी तो अपने तिरसठवें वर्ष में प्रवेश पर मुझे यह पोस्टकार्ड लिखा-

खड़ा-खड़ा मुस्कारहा, उजला हुआ अतीत।
हंसते-गाते हो गये, बांसठ वर्ष व्यतीत।।
आंगन में जुड़वां रहे, हर्ष और संघर्ष।
प्रभु जाने क्या लायेगा, यह तिरसठवां वर्ष।।
कलम सदा चलती रहे, मरे न इसकी धार।
यही मुझे आशीष दें, मानूंगा उपकार।।

ऐसे विनय तथा दूब से नम्रहेपन ने ही उन्हें बालकवि बना रखा है। पूरनजी का इशारा पा मैंने बैरागीजी से पूछा-

-शेष पृष्ठ सात पर

दुखदर्द में सहायक बनते शोकगीत

हमारे यहां कई जातियों में मृत्यु संस्कार भी बड़े विचित्र रूप में मनाये जाते हैं। यों किसी की मृत्यु कभी आनंददायी नहीं होती परन्तु उस शोक विह्वल अवस्था को उल्लासमय वातावरण देकर जो विविध रीति नियम पूरे किये जाते हैं उनके पीछे भी बड़ी गहन लोकदृष्टि अन्तर्निहित है।

राजस्थान के वागड़ क्षेत्र में रह रहे ब्राह्मण परिवारों के सर्वेक्षण में एक अजीब मृत्यु संस्कार देखने-सुनने को मिला। इसके अनुसार यदि किसी महिला का पति मृत्यु प्राप्त होता है तो उसके पश्चात विधवा हुई महिला को उसके पीहर ले जाया जाता है और वहां उसे समग्र सम्पूर्ण सिणगार कराया जाता है। उसे कौर किनारी वाली पोशाक पहनाई जाती है। हाथों में मेंहदी दी जाती है। काजल टीली लगाई जाती है। माथा गूंथा जाता है और जितना भी गहना होता है वह पहनाया जाता है।

विधवा को लेजाते-लाते समय खुला मुंह रखना होता है और पूरे सिणगार के साथ वह अपने पति-गृह लाई जाती है। उसके पश्चात उसके पति की अर्थी श्मशान में ले जाई जाती है। अर्थी श्मशान में ले जाने से पूर्व उसके पास बीच गोलाई में उसकी विधवा पत्नी को बिठा उसके चारों तरफ विधवा महिलाएं तथा दूसरे गोल घेरे में अन्य सधवा महिलाएं मिलकर घूमर नाचती हैं। इस समय वे शोकगीत में मृतक के जन्म से लेकर मरण तक के सुकर्म-कृत्यों को एक-एक कर चिंतारती हैं।

शव को श्मशान ले जाने के पश्चात महिला-समुदाय तालाब पर जाता है। इस समय भी विधवा को उसी सिणगार वेश में सबसे आगे कर दिया जाता है और वहां जाकर एक तरफ विधवा-समधी औरतें मिलकर उसका चूड़ा फोड़ पानी में फैंक देती हैं। सधवा महिलाएं यह संस्कार नहीं देखती हैं। लौटते समय विधवा की पोशाक वही रहती है।

केवल उसे एक साड़ी और ओढ़ा दी जाती है। इसबार उसका मुंह खुला नहीं होकर उसे पूरी ढक दी जाती है। घर लाकर उसे कमरे के भीतर एक कोने में बारह दिन तक बिठा दी जाती है। इस समय उससे प्रायः कोई सधवाएं बोलती भी नहीं हैं। या तो पुरूष किसी काम से उससे वार्तालाप करता है या बच्चों के माध्यम से कोई बात कहलाई जाती है नहीं तो विधवाएं ही यह कार्य करती हैं।

बारहवें दिन विधवा का भाई आता है। रात को उसे चुपचाप अकेले में चूंदड़ ओढ़ता है। यह वही चूंदड़ होती है जो शादी के समय ओढ़ाई गई होती है। इस समय उसके आस-पास कोई नहीं होता है। यह प्रसंग देखना भी अच्छा नहीं समझा जाता है। 9वें दिन विधवा बनी महिला के सिर के बाल नाई द्वारा कटवा लिये जाते हैं। ये बाल फिर हमेशा के लिए उस विधवा को साल-छ माह में कटवाते ही रहने पड़ते हैं। इस जाति में किसी भी विधवा का बाल रखना वर्जित समझा जाता है।

ग्यारहवें दिन संध्या को औरतें मिलकर फिर उसी तरह उसको बीच में बिठाकर गोलाई में घूमर लेती हुई उसी तरह के गीत गाती रूदन करती हैं। बाहर से आने वाली समधी औरतें भी, विधवा-सधवा सभी, उस गांव की हर मुख्य सड़क तथा चौराहे पर उसी तरह घूमर लेती हुई आगे बढ़ती रहती हैं।

एक माह बाद माचीसा किया जाता है जिसमें पूरी जात को जिमाया जाता है। डेढ़ माह बाद मुख्य-प्रमुख रिश्तेदारों को बुलाकर जीमाया जाता है। ऋषि पंचमी के दिन सभी को हामे का भोजन कराया जाता है। अष्टमी को पूरी जात को काचीकूलर (चावल को पीसकर शक्कर, घी मिलाकर बनाये जाने वाले लड्डू का भोजन) खिलाया जाता है और नवमी को रिश्तेदारों को बुलाकर जीमाया जाता है।

डूंगरपुर की श्रीमती पुष्पाबाई ने बताया कि मृतक के बाद पूरे बारह महिनों तक यह शोगाला चलता रहता है। हर त्यौहार आने के चार दिन पूर्व से रोना-धोना प्रारंभ हो जाता है। दीवाली के दिन प्रातः 4 बजे सारी जात के लोग तालाब पर जाकर लकड़ी की बनी छोटी निसरनी पर दीपक रखकर पानी में छोड़ते हैं। पूरा बरस होने पर बरसी की सुख सज्जा दी जाती है। इस सज्जादान में यदि औरत मरती है तो उसकी पूरी पोशाक, बेवड़ा आदि किसी गरीब समधी-रिश्तेदार को दिया जाता है। पुरूष की मृत्यु पर उसकी पूरी पोशाक दी जाती है।

औरत की मृत्यु होने पर पूरे बारह माह तक प्रतिदिन एक समय किसी गरीब साधु औरत को और आदमी की मृत्यु होने पर साधु आदमी को भोजन कराया जाता है। अंत में इन्हें एक-एक पोशाक दान की जाती है। पूरे वर्षभर तुलसा पौधे को पानी पिलाया जाता है और नियमित दीप जलाया जाता है। कहीं एक-एक बेवड़ा प्रतिदिन किसी धर्मस्थान या प्याऊ में पानी का डलवाया जाता है।

उदयपुर के रंगनिवास मिष्ठान्न के श्री देवीलाल नाईवाले ने बताया कि पूरे वर्ष जितनी हैसियत हो उतना दानपुण्य और निकाला जाता है। गाय का दान दिया जाता है। सम्पन्न लोग अधिक अच्छा आभूषणों तक का दान करते हैं नहीं तो भी गरीब से गरीब व्यक्ति को ये पारंपरिक संस्कार तो पूरे करने ही होते हैं।

मृतक व्यक्ति के पुत्र को भी कई सारे संस्कार पूरे करने होते हैं। पूरे बारह दिन उसे भी प्रतिदिन श्मशान जाकर पिंडदान देना होता है और दूध-दही तथा अलूणे जौ का भोजन करना होता है। इन दिनों वह किसी को छूता नहीं है। चटाई पर उसे सोना होता है और उसके लिए उसका भोजन भी उसकी बहिन ही तैयार करती है।

मृतक के संबंध में ऐसे रूदन गीत मैंने अपने प्रातःकालीन भ्रमण के दौरान गाड़ोलिया महिला से भी सुने हैं। पंचवटी में सड़क पर सर्दी में कोई 5 बजे जब मैं घूमता हुआ निकला तो गोड़ोलीन को अपने खाट पर सोई हुई ही मैंने इस प्रकार का विलाप करते सुना। उस महिला ने रजाई से अपना संपूर्ण शरीर ढक रखा था और रह-रह कर लंबी आवाज में मृतक का गुणवर्णन करती हुई सिसकियां लेती जा रही थीं।

आसपास तीन-चार गाड़ियों वाले सभी गाड़ोलिया परिवार सोये हुए थे। वह रूदन एक विशिष्ट लय में था। मुझे आज भी वह लयबद्ध रूदन स्मृति में है। मुझे समझते देर नहीं लगी कि गाने का यह रोना कष्टों के पहाड़ों को काटता हुआ आदमी को संतुलित किये रहता है। ऐसे दुख दर्दों में गीत हमारे कितने संगी सहायक होते हैं यह जानने से अधिक अनुभव की वस्तु है।

-रंगायन से साभार

पोथीखाना

तफरी का लेखन नहीं 'लोकावलोकन'

कुछ लोग होते हैं जो 'बैठे ठाले' का लेखन करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो 'बैठे से बेगार भली' के लिए लिखते हैं। ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं है जो 'तफरी के लिए' लिखते हैं। वे लोग निराले होते हैं जो गंभीर लेखन के लिए जाने जाते हैं।

श्री विजय वर्मा उन लेखकों में से हैं जिन्होंने बहुत अधिक परिमाण में नहीं लिखा। उनका लेखन गाय के उस धारासण दूध की तरह भी नहीं है जो प्रतिदिन ही किसी एकांत स्थल पर दुग्धाभिषेक किये रहती है। सच तो यह है कि वे सोचबद्ध, सीमाबद्ध और समयबद्ध होकर अपने सधेसधाये, रचेपचाये, अनुभव तथा अध्ययनशील मन लिए निश्चित प्रमाण से अपना आलेख लिपिबद्ध करते हैं जैसे कोई स्वरकार पूरी तैयारी के साथ मन-हठ कर किसी संगीत को स्वरलिपि प्रदान करता है।

हाल ही में प्रकाशित उनके ग्रंथ 'लोकावलोकन' को पढ़कर सहज ही यह कहने को मन करता है कि उनका लेखन तफरी का लेखन नहीं होकर सैंकड़ों ग्रंथों, शास्त्रों में लिखे कथनों तथा विभिन्न मनीषियों, विद्वानों और चिंतकों द्वारा प्रस्तावित विचारों की साक्षी में अपने मत-सम्मत का प्रतिपादन करते हुए जो निकष उन्होंने प्रस्तुत किये वे उस विराट लोकचेतना से सृजित होकर अंकुरित हुए हैं जिनकी पहचान हर कोई नहीं कर सकता। यह पहचान उस अंतर की पहचान होती है जिसके लिए बाहर का खुलापन आवश्यक नहीं होकर अंतर का पट खुला होना अनिवार्य होता है। बाह्य दृष्टि में जो सबके लिए हेय, सीमित और निरर्थक होता है, अंतरदृष्टि उसी में बहुत कुछ उपयोगी, असीमित तथा सार्थक होने की प्रतीति ढूंढकर लौकिक को तलाशती हुई अलौकिक बनाती हुई लगती है।

ग्रंथ की भूमिका में विदुषी लेखिका कपिला वात्स्यायन का यह कथन उल्लेखनीय है- ''यह प्रतीति संतोषदायक है कि लेखक की दृष्टि

सीमित, एकपक्षीय और ऐकेडेमिक न होकर खुली, व्यावहारिक और बहुआयामी है। इसके चलते वह हेय समझकर छोड़ दिये जाने वाले लेकिन प्रभूत मात्रा में रचे गये और बहुत पढ़े गये 'फुटपाथिया साहित्य' को भी अपना विषय बनाता है। आचार्य हजारी प्रसाद जी द्विवेदी का कथन याद आता है-'मैं बालू से भी तेल निकालने का सचमुच प्रयत्न करता हूं बशर्ते कि वह बालू मुझे अच्छी लग जाय।' इसी तरह लेखक लोक के दूसरे कम प्रीतिकर पहलू पर लिखने का जोखिम भी उठाता है। लोक सम्बंधी लेखन कभी-कभी एक एकांत, भावुक, अतिवाद से त्रस्त और एक अन्वेषक यौक्तिकता का अपेक्षाकृत अभाव दर्शाता हुआ होता है।'' (पृ. 6)

ग्रंथ में 22 आलेख हैं। इनमें तीन आलेख तो संख्याओं को लेकर ही हैं। दो आलेख व्यक्ति-कृतित्व से संबंधित हैं यथा- कोमल कोठारी होने का मतलब तथा लोककथा और विजयदान देथा का कृतित्व। तीन आलेख फुटपाथिया साहित्य को लेकर हैं। अन्य आलेखों में जामड़ा, सिंधु और कड़खा : लुप्त होती परंपरायें, लोकगाथा और इतिहास, बाग संबंधी संदर्भ, लोकवार्ता और भारतीय परिवेश, लोक का कस्बाई विस्तार, कष्टकथा लोकसंगीत की, ये मसखरे, सुजान तथा बारहमासा।

श्री विजय वर्मा लोक और मार्गी दोनों संस्कृतियों के सुविचारित लेखक हैं इसलिए उनकी दृष्टि सदैव दोनों संस्कृतियों के सकारात्मक सोच तथा समन्वय पक्ष पर रही है। किसी एक को पकड़ने अथवा महत्वपूर्ण बनाने और दूसरी को छोड़ने अथवा कम महत्व की बताने से बहुत कुछ खोया जा सकता है और पूर्णता को नहीं पाया जा सकता। सच है कि मार्गी संस्कृति का सब ओर बोलबाला तथा उल्लेखनीय दरसाव है किन्तु लोक के बिना उसका आलोक क्षीण हुआ ही दृष्टिगत होता है। लेखक ने अपने लेखकीय वक्तव्य के प्रारंभ में ही स्पष्ट कर दिया है, ''भारत में लोकसंस्कृति एक जीवित, समानान्तर उपस्थिति है। वह परिनिष्ठित मार्गीय संस्कृति के समानान्तर रहती आई है। वह मुख्यत: गांवों और आदिवासी अंचलों की वस्तु रही है जबकि परिनिष्ठित संस्कृति मुख्यत: शहरों और कस्बों में फलती-बसती रही है। दोनों में बहुत सा आदान-प्रदान होता आया है। विशुद्ध मार्गीय जैसा कुछ भी नहीं होता। कहीं प्रच्छन्न कहीं ज्याद स्पष्ट रूप से लोक में शास्त्र और शास्त्र में लोक की व्याप्ति बराबर रहती आई है।'' (पृ. 9)

कहना नहीं होगा कि लोक और शास्त्र का समानान्तर सोच चलता रहेगा। दोनों का यह फलन उसी प्रकार है जैसे पौधे की एक डाल पर कलम कर दूसरा पौधा तैयार किया जाता है ठीक उसी प्रकार जैसे किसी अंगूठे या अंगुली पर छोटा अंगूठा या छोटी अंगुली अपना उभार या कि अस्तित्व दिये दिखाई देती है। इस दृष्टि से लोकावलोकन के आलेख गहरी जानकारी देने के साथ-साथ वैचारिक परिदर्शना को भी मंथनजीवी बनाने में महत्ती भूमिका देंगे।

-भात

पोथीखाना

हाशिये में खड़े लोगों की कहानियां

हिन्दी के वरिष्ठ कहानीकार, कवि और पत्रकार कमर मेवाड़ी की तीस कहानियों का स्तबक है-पीड़ित, शोषित लोगों के दर्द को उजागर करती ये कहानियां खुशहाल समाज के स्वप्न को

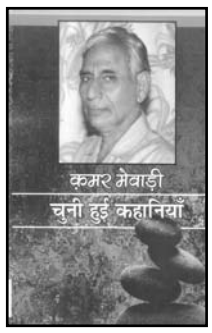

साकार करने हेतु प्रतिबद्ध हैं। भूमिका में रूपसिंह चंदेल ने ठीक ही लिखा- ''कमर मेवाड़ी छोटी कहानियों के बड़े कथाकार हैं। उनके अधिकांश पात्र हाशिये पर पड़े लोग हैं। अनवरत संघर्ष जिनके जीवन का चिर साथी है। वे अंतिम, वास्तविक और जीवंत हैं। वे हमें अपने निकट के प्रतीत होते हैं। भाषा की सहजता और छोटे वाक्य विन्यास कमर मेवाड़ी की विशेषता है।'' (पृ.8)

पेंशन विभाग की ढुलमुल नीति पर करारी चोट करती कहानी है 'ऊंचे कद का आदमी'। कहानी का नायक कहता है- 'मर जाऊंगा पर रिश्वत नहीं दूंगा।' 'बदलते रिश्ते' कहानी में मां की मौत के बाद पिता द्वारा अकेलेपन को दूर करने के लिए दूसरे जीवन साथी को अपनाना वयस्क बेटे को नागवार लगता है किंतु सौतेली मां द्वारा बेटा संबोधन अहसास कराता है उसके मां-बाप दोनों जिन्दा हैं।

उठो, जागो अपने कर्तव्य पथ पर बढ़ो की अनुगूंज 'जिजीविषा' कहानी में है। अंधा और अकेला आदमी लाठी के सहारे आगे बढ़ रहा है और वह नौकरी से निकाले जाने पर हताश है। सदियों से शोषित रहे निम्न वर्ग में आई चेतना की कहानी है 'फैसला'। कहानी में आंचलिकता का पुट द्रष्टव्य है- 'क्यों रे जगुवा कल संध्या को काहे का शोरगुल हुवा तेरे हिया। काहे हो बाबू साहब क्यों धमकाय रहे इस बिचारे को। इसका दोस तो बताओ। देस माय कानून है, लोकतन्तर है। हियां तो अभी तक ठाकुरों का ही राज है।'

नारी की दैहिक स्थितियों ने हमेशा उसकी शक्तियों को सीमित किया मगर 'सूरज फिर निकलेगा' कहानी की सुखिया सब्जी काटने का चाकू भी घोंप देती है, अपनी अस्मत का सौदा करने आए सेठ के। बाप-दादों की चल अचल सम्पत्ति पर टकटकी लगाए बैठे भयावह स्याह अंधकार में डूबे लालची बेटे की मन:स्थिति को प्रकट करती कहानी है 'खंडहर'। 'धुंध में फंसे लोग' बंधुआ मजदूर तुलछा के दर्द की अभिव्यक्ति है। मजदूर वर्ग में अपने अधिकारों के प्रति आई जागृति को रेखांकित करती कहानी है 'उनकी जीत'। समय पर वेतन नहीं मिलने से मुट्ठियां ही नहीं, भृकुटियां भी तन जाती हैं। 'विचित्र आदमी' अर्द्धांगिनी के उपार्जित द्रव्य पर पलने वाले आदमी की कहानी है। लक्ष्मी तो तभी रहती है जब नर नारायण कर्मरत रहे, अन्यथा लात लगाकर चली जाती है।

प्रेम, भौतिक सुख और व्यवहार इसी प्रकार के त्रिकोण को इंगित करती कहानी है 'इतने सारे सुख'। प्रगतिवादी चेतना से संपृक्त 'उसका सुख' कहानी का नायक कालिया बाप की दो बीघा जमीन छुड़ाने के लिए दिन-रात एक करता है। पैसे की चमक और रूपये की दमक ने दाम्पत्य प्रेम को भी तहस-नहस करने में कमी नहीं रखी। इस यथार्थ का खुलासा बड़ी शिद्दत के साथ कमर मेवाड़ी ने 'खंडित' कहानी में किया है। असली प्रेम कढ़ी के उबाल के समान नहीं होता। प्रेम! पद-प्रतिष्ठा और पैसा नहीं देखता, वह आत्मभाव देखता है। प्रेमांकुरण प्रकारांतर में पराकाष्ठा चाहता है। 'फिर कब आओगे आनंद' का कथानक यही कहता है। धर्मांध लोगों के आचरण पर बेबाक टिप्पणी करती कहानी है 'पुजारिन।'

मजदूर वर्ग की दयनीय, बुजुर्गों की बेबसी, पारिवारिक संबंध, मानवीय रिश्ते, उद्दाम काम, प्रेम, अवसादग्रस्त परिस्थितियों, महकमों की उदासीनता, लालफीताशाही, लोकतंत्र की जमीनी हकीकत आदि मुद्दों को पुरजोर तरीके से उठाया है।

ये कहानियां निरर्थक बौद्धिक दांवपेच से मुक्त हैं। कहानियों के इम्प्रेशन्स पाठक के जेहन के राडार पर क्षिप्रता से तरंगायित होते हैं। इन कहानियों में आंचलिक परिवेश, आंचलिक भाषा और उर्दू के शब्दों से चमक आ गई है। प्रकाशन स्तरीय और काबिले तारीफ है।

पुस्तक कानपुर के अमन प्रकाशन द्वारा चुनी हुई कहानियां सिरीज के अन्तर्गत प्रकाशित है। कुल 152 पृष्ठों की यह किताब 152 रूपये मूल्य की है। लेखक कमर ने यह पुस्तक उन तमाम लोगों को समर्पित की हैं जिन पर उनकी कहानियां केन्द्रित हैं।

-नगेन्द्रकुमार मेहता

सदाचार को दबाता कदाचार

-डॉ. दीनदयाल ओझा-

प्रतिदिन समाचार पत्रों और टीवी चैनलों को पढ़ने-देखने से प्रत्यक्ष दिखाई देता है कि सदाचार को कदाचार दबाता जा रहा है। देवीय गुण सम्पन्न मानव क्यों दानवीय गुण अपनाता जा रहा है? इस भावनात्मक पतन के मूल कारण क्या हैं? अगर राष्ट्र के कर्णधारों ने इस भावनात्मक एवं क्रियात्मक पतन के मूल कारणों को गंभीरता से नहीं लिया और समय रहते सम्यक उपचार नहीं किया तो वर्तमान से अधिक भविष्य बिगड़ जायेगा और परिस्थितियां ला इलाज हो जायेंगी।

स्पष्ट लगता है, हमें ईमानदारी से विचारना होगा, यह सब क्यों हो रहा है? इस सदाचार का मूल कहां है? कहां और किस तरह पैदा हो रहा है, पल रहा है, पनप रहा है, पोषित हो रहा है? कहीं ऐसा तो नहीं कि गीता के अनुसार श्रेष्ठ पुरूष जो-जो आचरण करता है अन्य पुरूष भी वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं। इसी का भिन्न रूप यथा राजा तथा प्रजा कहा गया है। जहां अपूज्यों की पूजा और पूज्यों का अपमान होता है वहां अकाल मरण और भय उत्पन्न होता है। कहीं हमारा हृदय जगत श्रव्य जगत और शिक्षा जगत भ्रष्ट तो नहीं किया जा रहा है? कहीं हमारा खान-पान रजोगुण और तमोगुण वर्धक तो नहीं है?

सदाचार-कदाचार

सदाचार
स्व नियंत्रण का भाव है
और कदाचार स्व नियंत्रण के
अभाव का भाव है।
सदाचार सहज सरल
और एकनिष्ठ है
और
कदाचार असहज, वक्र एवं
बहुनिष्ट है।
सदाचार सदा सर्वदा
सुधा रस है तो
कदाचार पल-पल हलाहल है।

कुछ ऐसे सवाल हैं जो मुझ संन्यास आश्रम में जीने वाले 88 वर्षीय ब्राह्मण को अत्यधिक व्यथित करते हैं। क्या कारण है कि आजादी के पश्चात हमारी अधिकांश मनोभावनाएं सदाचार से विमुख हो कदाचार की ओर बेलगाम उन्मुख हुईं। लगता है, हमने सदाचारमय जीवन जीने के समस्त गुणों को तिलांजलि दे दी। 'धम्मपद' में कहा गया है- चंदन या तगर, कमल या जूही की सुगन्धों से सदाचार की सुगन्ध उत्तम है। रवीन्द्र तो यहां तक कहते हैं कि जिस समय मनुष्य पशु तुल्य आचरण करता है उस समय वह पशुओं से भी नीचे गिर जाता है।

भावनात्मक और क्रियात्मक पतन का काल ऐसा तो मैंने न देखा न इस बहुतायत से सुना। सत्य तो यह है कि सरस्वती ही सदाचार की संरक्षिका है। 'श्री सरस्वती स्तोत्रम्' में कहा गया है कि हे देवी सरस्वती! तुम्हारे ही प्रभाव से ब्रह्मा जगत को बनाते हैं। विष्णु पालते हैं और शिव विनाश करते हैं। हे प्रकट प्रभावशाली! यदि इन तीनों पर तुम्हारी कृपा न हो तो वे किसी प्रकार अपना काम नहीं कर सकते।

डॉ. कोठारी को महाश्रमण सेवा सम्मान

तुलसी साधना शिखर समिति ने समाजसेवी डॉ. यशवन्त कोठारी को महाश्रमण सेवा सम्मान प्रदान किया। महामंत्री गणेश डागलिया ने बताया कि डॉ. कोठारी को यह सम्मान समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए पश्चिम बंगाल के तुमोनी जिले में आचार्य महाश्रमण ने प्रवास स्थल पर हुई धर्मसभा में दिया। पुरस्कार के तहत डॉ. कोठारी को एक लाख रूपये और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया। डॉ. कोठारी ने सम्मान की राशि में से 21 हजार रूपये निर्धन, असहाय एवं दिव्यांग छात्रों की शिक्षा-दीक्षा तथा छात्रवृत्ति के लिए दिये।

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 मई 2017

सम्पादकीय

उद्घाटन की प्रतीक्षा में खंडहर होते...

हमारे देश में अनेकानेक निर्माण कार्य पूर्ण होने पर खड़े-पड़े रूपांकन हैं जो उद्घाटन की प्रतीक्षा में हैं। अनेक ऐसे भी हैं जो निर्माण के बाद अनुद्घाटित होकर आकार, रूप, शक्ल, दर्शन खोते जा रहे हैं याकि खंडहर होते जा रहे हैं।

दूसरी ओर अनेक ऑफिस किराये के भवनों में चल रहे हैं। उद्घाटनकर्ताओं में राजनेता ही हैं जो बड़े, बहुत बड़े, सबसे बड़े हैं। अन्य कोई बड़े या तो हैं ही नहीं या मान्य-सम्मान्य नहीं हैं। वे बार-बार उद्घाटन की तरीख देते हैं और बार-बार अति व्यस्त होते रहते हैं। अखबारों की हवाओं में बने रहकर जनता की निगाहों में विशिष्ट बनकर अपनी सीट मजबूत करने का यह भी एक सोलीड सोच है।

नेताजी जानते हैं कि उनके बिना कोई पत्ता नहीं हिलता है। हर जगह उनकी पतंग की डोर हिलाने वाले बैठे हैं। हिलाने वालों को कुछ पता नहीं होते हुए भी वे महत्वपूर्ण सूचनाएं देकर छोटी जनता में बड़े आदरणीय बनते हैं।

नेताजी जब भी आयेंगे, भाषण देंगे। उद्घाटन भाषण के बाद चाटण की उम्दा व्यवस्था होगी। ये तीनों पक्ष ब्रह्मा विष्णु महेश जनित हैं। राजनीति की अन्तरधारा वोट की होती है। लोग ध्यान से भाषण सुनते हैं जो कानों में अमृत घोलता है। एक ओर कबाड़े से कंचन निकाला जा रहा है। दूसरी ओर कंचन कबाड़ा हो रहा है। किसको पड़ी है। यह मंहगाई की घड़ी है। मंत्रीजी की महरबानी हो गई तो बीजली का खम्भा लग जायेगा। खम्भा लग जाने पर बीजली देर सवेर आयेगी ही। सब्र में ही सार है। आजादी के बाद आज भी वही सब्र और उसमें से टपकता सार जनता देख रही है।

नरेन्द्र मोदीजी इधर भी ध्यान देंगे। अरे वे कहां-कहां देखेंगे। उद्घाटन मंत्री बना नहीं सकते। हर मंत्री अपनी तख्ती, अपनी शिला देखना चाहता है। शिलान्यास भी उसी के कर-कमलों से और उद्घाटन भी उसी के चरण-कमलों से। पूरा शरीर हाजिर है जन-सेवा के लिए। दूसरों को कष्ट क्यों। मंत्रीजी स्पष्ट हैं।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' जिस प्रेमाचार से आप भेज रहे हैं उसी मनोयोग से मैं तसल्लीपूर्वक उसके शब्द-शब्द से रंजित हुआ लगता हूं। हर अंक 'क्या भूलूं क्या याद करूं' जैसी स्थिति लिए रहता है। 'स्मृतियों के शिखर' स्तंभ में उच्चस्थ से लेकर निम्न-उच्चस्थ तक के व्यक्ति जिस आत्मीयता सम्मान गौरव तथा यश से मंडित किये मिलते हैं, वह बेमिसाल है। इसमें धर्म, अध्यात्म, समाज, लोककला, संस्कृति से सधे सिद्ध व्यक्तियों पर बड़ी सहजता से, आत्मविश्वास से मगर गर्वित होकर ज्ञात-अज्ञात-अल्पज्ञात को अपनी चौपाल पर मंडित करते हैं, वस्तुत: वे सब भारतीय मनीषाजनित हमारी विरासत के विराट रूप ही हैं। दयाराम, तोलाराम जैसे कलाकार गुमनामी के घोर अंधेरे में ही दमघोटू हो जाते। इस स्तंभ में वे सदा के लिए शिखर बंध हो गये हैं।

कान्यो मान्यो की चुहलबाजी धीरे से कानऐंठ हल्की फुल्की चपत दे गाल को गुल्ती देने में नहीं चुकती। कान्यो और मान्यो जैसे नाम हमारे ग्राम्यजीवन के जीवन्त उद्बोधक हैं। दोनों अपने संवादों में लोकजीवन की रंगीन जीवन पद्धति का दरसाव देते बड़े मोहक, संजीदा तथा हगेमगे लगते हैं।

- सोहनलाल धींग, कानोड़

'शब्द रंजन' नियम से मिलता है। पढ़ता हूं पूर्ण मनोयोग से। यदा-कदा डॉ. महेन्द्रजी भानावत से बात हो जाती है। उन्हें नमन। अन्यान्य विविधरूपा लेखों, समाचारों को पढ़ा और उन सबके साथ आपका सम्पादकीय 'प्रदेश तो उत्तरप्रदेश और सब प्रदेशिया' भी पढ़ा। योगी और मोदी दोनों मेरी दृष्टि में साहित्य, साहित्यकारों और संस्कृति पक्ष को विस्मृत किये जा रहे हैं। पं. नेहरू ने एक वार्तालाप में कहा था- तुलसीदास, अकबर के समय में हुए तो विनोबा ने कहा- ऐसा क्यों नहीं कहते कि तुलसीदासजी के समय अकबर हुआ।

-डॉ. दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

प्रताप जयंती पर....

भाले से परमवीर पराक्रम

महाराणा प्रताप की वीरता के किस्से जब से मैंने समझ पकड़ी तब से सुनता आ रहा हूं कि उनके पास सवा मन का भाला था जिससे वे युद्ध कर विजय प्राप्त करते। इस 'सवा मणी भाला' के संबंध में कइयों से, इतिहासज्ञों, विद्वानों, गुरुजनों से भी पूछताछ करता रहा पर संतोषजनक समाधान नहीं पा सका।

पूर्व में कलामंडल का एक हिस्सा बावजी निर्भयसिंहजी की बाड़ी से सबंधित भी रहा सो मेरा उनसे अच्छा परिचय हो गया। उनका परिवार मेवाड़ राजघराने से संबद्ध होने से मैंने उनसे बहुत सारी अजूबी जानकारियां प्राप्त कर न केवल अपने को समृद्ध किया अपितु अपने लेखन द्वारा दूर-दूर तक मेवाड़ की शान, शक्ति, भक्ति और समृद्ध विरासत को गौरव मंडित भी किया।

वर्ष 1995 में भारतीय लोककला मंडल से सेवानिवृत्ति के पश्चात भी मेरा संपर्क बावजी से उनके निर्भय बाग में बना रहा। एक दिन मैंने उनसे महाराणा प्रताप के सवामणी भाले के बारे में तथ्यात्मक स्थिति जानने की उत्सुकता प्रकट की तो उन्होंने बताया कि बड़े लोगों के किस्से भी बड़ी बड़ाई लिए बड़े होते हैं। मैं स्वयं भी बालपने में अपनी भुजाओं की कसरत से प्रताप सा जोश भरता। स्कूल में एक नाटक भी खेला। उसमें सैनिक का अभिनय कर जोर की हूंकार मारी जिसका प्रभाव कई दिनों तक छाया रहा।

बावजी ने बताया कि इतिहासकारों ने भी प्रतापजी का सवा मणी भाला बता उनकी महिमा बढ़ाई किंतु मेरे अन्तस में यह बात नहीं बैठी कि इतने वजनी भाले से क्या कोई युद्ध कर सकता है। क्या संभव है कि ऐसे भाले से कोई एक हाथ से दुश्मनों के छक्के छुड़ा सकता है। मैं भी खोज करता रहा तो असलीयत जानने को मिली। असल में दूसरे वीर तलवार से लड़ते किंतु प्रतापजी का भाला चलता। कोई भी शस्त्र, चाहे भाला हो या तलवार, जितना हल्का होगा, उतना ही चलाने में और वार करने में आसान रहेगा। इस दृष्टि से राणाजी का भाला औसत भाले से थोड़ा बड़ा किंतु वजन की दृष्टि से दो किलो से अधिक नहीं था किंतु उनके शौर्य पराक्रम और वीरोचित रूप को दिखाने के लिए भाले को भी अत्यधिक महिमावान बना दिया।

बावजी ने प्रताप से जुड़ी चावंड की बड़ेरों से सुनी एक घटना का उल्लेख कर बताया कि एक नार (शेर) प्रतिदिन वहां आकर एक गाय का भख लेता तब प्रताप ने सैनिकों को वह शेर पकड़ने को कहा किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली तब स्वयं प्रताप ने अपने हाथ में बाघनखा धारण किया। बाघनखे की यह विशेषता होती है कि वह जिस शिकार के मुंह में घुस जाता है, उसका पूरा बाका (जबड़ा) चीर देता है।

राणा प्रताप ने शेर का कड़ा मुकाबला किया। ज्योंही शेर ने उन पर आक्रमण करने को मुंह खोला, उन्होंने बाघनखे वाला हाथ उसके मुंह में घुसेड़ जबड़ा फाड़ दिया। नारमुखा तीखे कांटे की तरह लगकर अंग-भंग कर देता है और उसकी पीड़ा बड़ी जबर्दस्त असह्य होती है। वाबजी ने बताया कि नार का काम तो तमाम हो गया किंतु मरते-मरते वह भी अपनी कारगुजारी कर गया। उसने प्रतापजी की आंतड़ियां तोड़ दीं। इससे उनकी पीड़ा बढ़ती गई और दो दिन बाद उन्हें भी अपनी जिंदगानी से हाथ धोना पड़ा। यह खबर लियाकत हुसैन ने अकबर के पास पहुंचाई तब उसने सिर पर अपना हाथ रख बड़ा अफसोस जताया। उस समय चारण कवि दुरसा आढ़ा दरबार में उपस्थित थे। उन्होंने बादशाह की पीड़ा भांप छप्पय सुनाया जिसका भाव है-

हे प्रताप! तेरी मौत की खबर सुन बादशाह अकबर ने अपने दांतों के बीच जीभ दबाई। आंखों से आंसू छलकाये। तूने न तो अपने घोड़े के कभी दाग लगने दिया और न किसी के सामने अपनी पगड़ी ही झुकाई। न कभी शाही डेरे गया और न किसी शाही झरोखे के नीचे ही खड़ा रहा। सदैव विजयी रहा। यह सुन दरबार में उपस्थित सभी दरबारियों में सन्नाटा छा गया। वे समझ बैठे कि इस पर बादशाह दुरसा ऊपर सख्त नाराज हो गया किंतु ऐसा नहीं होकर अकबर ने उसे इनाम दिया और कहा कि दुरसा ने मेरी भावना को ठीक से समझा है। प्रताप मेरा दुश्मन था किंतु एक बड़ा मनुष्य और जबर्दस्त योद्धा था।

पारखी घोड़े

घोड़ों की परख आदमियों को तो होती ही है पर घोड़े भी पारखी होते हैं जो अपने स्वामी की हर समय परख बनाये रखते हैं। ऐसे कई घोड़े हुए हैं जो देव तुल्य स्वीकारे गये और जनजीवन में उनकी पूजा-प्रतिष्ठा बनी हुई है। कई जातियों में देवताओं के साथ उनके घोड़ों की याद में उनके स्मारक बने हुए हैं।

प्राचीन समय में मुख्यत: युद्ध में या फिर शिकार में घोड़े बड़े उपयोगी रहे और जैसे वे वफादार होते वैसे ही कद्रदान तो हर समय घोड़ों को साथ रखते। सबसे बड़ा हथियार ही घोड़ा होता। वीरवर कल्लाजी राठौड़, जयमलजी, पत्ताजी, गोराजी, बादलजी ऐसे वीर हुए जो अपने घोड़ों से पहचाने गये। रामदेवजी, देवनारायणजी, तेजाजी, गोगाजी जैसे वीर लोकदेवता के रूप में घोड़ों के साथ पूजित हैं। गरासियों में तो घोड़ा बावसी के रूप में देवरे पर माटी के घोड़े चढ़ाये जाते हैं। रामदेवजी को कपड़े के घोड़े चढ़ाते हैं।

घोड़ों के पारखी बावजी निर्भयसिंहजी ने अपने निर्भय बाग में 15 जनवरी 2002 को बताया कि बचपन से ही उन्हें घुड़सवारी में प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने कई शिकारें कीं। कई सारे अनुभव अर्जित करते वे घोड़ों के बड़े पारखी हो गये। उनके दादाजी का घोड़ा बड़ा समझू था जो अवसर को भांप लेता। उसे इशारा देने की जरूरत भी नहीं रहती। एकबार उसे एक सूअर के पीछे कर दिया। आगे सूअर और उसके पीछे-पीछे दादाजी अपने घोड़े पर चलते रहे। इससे सूअर घबरा गया। वह पसीना-पसीना हो गया। डर इतना बैठ गया कि अंत में वह सुस्त पड़ गया। ऐसे वक्त घुड़सवार अपने हथियार से उसका काम तमाम कर देता है या फिर घोड़ा स्वयं ही उसे अपने पांवों से रगड़ खुरों से मसल देता है।

इसी प्रकार दादाजी ने एकबार रींछ के पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। रींछ बहुत ताकतवर होता है। घोड़ा बुरी तरह उसके पीछे भागता रहा। नतीजा यह हुआ कि अंत में घोड़ा थककर चूर हो गया और जमीं पर जा गिरा। उसके साथ दादाजी भी नीचे गिर पड़े। कुछ समय बाद ही घोड़ा उठा मगर दादाजी नहीं उठ पाये और बड़ी मुश्किल से रेंगते हुए एक पत्थर पर जा बैठे। घोड़ा खड़ा-खड़ा देख रहा था। कुछ ही समय बाद वह दादाजी के पास आया। अपना मुंह नीचे किया। दादाजी उसे पकड़ उठे और पीठ पर बैठ घर पहुंचे।

बावजी ने बताया कि एकबार उन्होंने रींछ की शिकार की। बंदूक का निशाना लगाते ही रींछ ऐसा चीखा जैसे कोई मानवी हो। बावजी समझे रींछ की बजाय उनसे कोई मनुष्य मर गया है पर दूसरी बार ज्योंही उन्होंने बंदूक दागी तो पता चला कि रींछड़ा मौत के घाट पहुंच गया है। यह सब घोड़े के कारण हुआ। यदि घोड़ा जरा भी ढिलाई करता तो रींछ बावजी पर झपट्टा मार देता। रींछ का झपट्टा बड़ा खतरनाक होता है। उसके आगे कई बार शेर भी मात खा जाता है।

जानवरों के खुरों की बातचीत के दौरान बावजी ने बताया कि खुर तो गायों के, बैलों के, बकरियों के और गधों के भी होते है किंतु घोड़ों के खुरों का मुकाबला नहीं। इन खुरों की यही खासियत है कि पूरे ब्रह्मांड की ऊर्जा उन खुरों में एकत्र होती रहती है। यह उन खुरों के नीचे लगी नाळ में समाहित होती है। इसीलिए नाळ लगाई जाती है। उस नाळ में जब पूरी ऊर्जा भर जाती है तब वह स्वत: घोड़े से अलग हो जाती है। इस नाळ को बिना गरमास दिये, तपाये, गर्म किये वींटी बनाई जाती है। जो जन इसे धारण किये रहता है उसमें भी वैसी ही ऊर्जा, शक्ति बनी रहती है। नाळ काले घोड़े की अच्छी समझी जाती है। घोड़ों की एक खासियत यह भी है कि वह सदैव खड़ा रहता है। यदि कभी बैठता भी है तो उसे कोई देख नहीं पाता है। इस प्रकार घोड़ा जानवरों में सबसे अव्वल, स्फूर्ति एवं शक्तिदायक तथा परिस्थिति को तत्काल भांप तदनुसार कार्य करने की क्षमता लिये होता है। स्वामीभक्ति में भी उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। महाराणा प्रताप के घोड़े चेटक को सब घोड़ों में अव्वल, श्रेष्ठ तथा देव-घोड़ा कहा गया है।

खोज-खबर

जरगाजी का मेला

अछूतों एवं पतितों के उद्धारक के रूप में रामदेवजी की लोक-कल्याणकारी सेवायें बड़ी उल्लेखनीय रही हैं। दयाराम भील ने 15 फरवरी 1976 को भारतीय लोककला मंडल में बताया कि रामदेवजी बड़े अच्छे भजनी थे। अच्छे गायक के साथ-साथ अच्छे तन्दूरा-मजीरा वादक भी थे। उनकी वाणी का विचित्र व्यापक प्रभाव था। वे जहां भी जाते, सबको सदैव के लिए अपना बना लेते। वे जहां भी बैठते, कीर्तनियों-भजनियों का अपार समूह उमड़ पड़ता। सभी लोग भजनभाव में तल्लीन हो जाते और रात-रात भर अलख आनंद की बरसात होती रहती। इस भजन संगत में दूसरे संत, भक्त, साधकों के साथ-साथ स्वयं अपने भजन भी रचते और भक्त लोग बड़ी तन्मयता के साथ उनकी वाणी को विस्तार देते रहते। रामदेवजी के ये भजन मुख्यत: 'परवाण' कहलाते हैं। ये परवाण भजनों के ही अनुरूप होते हैं। फर्क केवल इतना ही रहता है कि ये भजन थोड़े बड़े होते हैं। इनका गायन भजनों के अंत में होता है। आज भी कुंडापंथी लोग अपने भजनों के अंत में रामदेवजी के परवाणों का गायन कर श्रद्धाभिभूत हो उठते हैं।

रामदेवजी के भक्त-भजनियों में जरगा नामक भजनी उनका प्रमुख चेला था। यह जाति से बलाई था जो आगे जाकर उनके घोड़े का चरवादार बन कर रामदेवजी की चरण-सेवा में रहा। प्रसिद्धि है कि एकबार रामदेवजी जरगा के साथ कहीं परचा देने जा रहे थे। देर रात हो जाने के कारण रामदेवजी जरगा तथा अपने घोड़े को एक स्थान पर छोड़ कर शीघ्र ही लौट आने को कहकर अकेले परचा देने चले गये। रामदेवजी परचा तो दे आए पर जरगे की स्मृति उन्हें नहीं रही और वे कहीं अन्यत्र जन-कल्याणार्थ निकल गये। रामदेवजी की आज्ञा से जरगा और घोड़ा खड़े के खड़े निर्जीव हो गये। बाद में रामदेवजी को अचानक जब जरगे की याद आई तो वे तत्काल उस स्थान पर पहुंचे। देखा तो जरगा और घोड़ा दोनों सूखे काठ बने हुए हैं। उन्होंने अपने आलम से दोनों को सरजीवित किया और जरगे को वचन मांगने को कहा। जरगे ने कहा कि मैं और कुछ नहीं चाहता, केवल यही चाहता हूं कि आपके साथ-साथ मेरा नाम भी अमर रहे। रामदेवजी ने कहा कि इसी स्थान पर प्रतिवर्ष तुम्हारे नाम से मेला लगा करेगा। इस मेले में नाम तो तुम्हारा रहेगा परन्तु धाम मेरी चलेगी। तब से वह स्थान और मेला जरगा के नाम से लोकप्रसिद्ध हुआ।

जरगाजी का मेला उदयपुर से 35 किलोमीटर दूर गोगुन्दा के पास शिवरात्रि को लगता है। इस मेले में रामदेवजी के भक्त कामड़, बलाई, रेगर, चमार, मेघवाल, मोग्या आदि अधिकाधिक संख्या में एकत्रित होते हैं। रात्रि जागरण के रूप में इस दिन रात-रात भर भजनभाव होते हैं।

बहुत से श्रद्धालु रामदेवजी की मनौती के रूप में कामड़ लोगों से झमा दिलवाते हैं और उनकी महिलाओं से तेराताली का प्रदर्शन करवाते हैं। कामड़ औरतें रामदेवजी की उपासना में अपने शरीर पर तेरह मजीरे बांधकर तेराताली के प्रदर्शन में तेरह प्रकार के विशिष्ट साधनापरक हावभाव व्यक्त करती हैं। इसी जरगाजी में कांचलिया पंथ की खास धूणी है।

उंदर्‌या पंथ

उंदर्‌या पंथ का नाम उंदरे अथवा चूहे के कारण पड़ा। यह एक तरह का देवी-पूजा का गुप्त अनुष्ठान है। जो इसके सदस्य होते हैं वे ही इसमें सम्मिलित होते हैं। सदस्य स्त्री-पुरुष सजोड़े होते हैं। नितान्त एकांत जगह इसका आयोजन होता है जिसकी किसी को भनक तक नहीं लगती।

राजमहल पुस्तकालय में बालकृष्णजी व्यास ने एक जुलाई 1980 को बताया कि देवी को भोग के लिए खुले चूरमे का ढगला कर दिया जाता है। ढगले को छूता कूकड़ी का कच्चा धागा ऊपर तक बांध दिया जाता है। इस बीच यदि कोई चूहिया वहां आकर चूरमे का कण ले जाती है तो शुभ माना जाता है और कोई चूहा आकर चूरमे के ढगले पर उछलकूद कर धागा तोड़ देता है तो आयोजन सफल समझ लिया जाता है।

ढगले के चारों ओर सदस्य स्त्री-पुरुष बैठ जाते हैं। ये सभी नग्नावस्था में होते हैं। सभी निराहार रहते हैं। एक-दूसरे का गुप्तांग स्पर्श करते हुए साधनामूलक स्थिति बनाये रखते हैं। किसी में कोई विकृति भाव नहीं आने पाता है। भजनभाव चलते रहते हैं। दो-तीन घण्टे बाद विसरामा लिया जाता है।

बालकृष्णजी ने बताया कि उन्हीं की जाति का उनका एक मित्र था जिसने यह जानकारी उन्हें दी। उनके मित्र ने कोई 25 वर्ष पूर्व अपने घर में निर्माण कार्य कराया था तब कमठाणे पर आये एक व्यक्ति ने उन्हें इस प्रथा की जानकारी दी। यह प्रथा जयसमंद के उधर प्रचलित थी। लौकिकता से ऊपर गृहस्थ जीवन में रहकर भी मनुष्य एक अवस्था के बाद संन्यासी जीवन जीता हुआ दिखावटी दुनियां के दंदफंद से ऊंचा उठकर उन्मुक्त होने को, अगले जीवन को सार्थक करने का बंध बांधता है। ऐसे व्यक्ति इनेगिने ही होते हैं। मोहमाया ममत्व अपनत्व से मुक्त होना अत्यंत दुष्कर कहा गया है तब भी, अपवाद स्वरूप ही कुछ लोग होते हैं जो अपना धारा कर गुजरते हैं। उंदर्‌या पंथ, कुंडापंथ जैसे और भी पंथ मेवाड़ में महके हैं।

ललित शर्मा को हाड़ौती गौरव सम्मान

जी राजस्थान न्यूज चैनल समूह द्वारा कोटा में रविवार 7 मई को प्रथम 'हाड़ौती गौरव सम्मान' झालावाड़ के इतिहासकार ललित शर्मा को प्रदान किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल, अध्यक्ष राजस्थान के कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, विशिष्ट अतिथि कोटा-बूंदी सांसद ओम बिड़ला एवं कोटा संभाग के पुलिस महानिरीक्षक विशाल बंसल ने ललित शर्मा को सामाजिक सरोकार के अन्तर्गत झालावाड़ विशेषकर हाड़ौती अंचल के इतिहास, पुरातत्व एवं कला, साहित्य के लेखन संरक्षण में की गई दीर्घ सेवाओं के लिए सम्मानित किया। समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करनेवाली 32 अन्य विभूतियों को भी सम्मानित किया गया। **- गायत्री शर्मा**

शहर छोड़ने से पहले

-डॉ. रमेश 'मयंक'

शहर फैलते जा रहे हैं
लोग अपनी स्मृतियों में
पनपते-बढ़ते-बिछुड़ते खोते जा रहे हैं
किस मुकाम तक पहुंच गये हैं हम?
आधी रात में शहर में
मोटर-कारों-बसों का शोर
परेशान नहीं करता।
दौड़ती एम्बुलेंस का सायरन
अपना काम करता।
कहीं कानफोड़ू संगीत भी
बज बजाकर नींद में
व्यवधान नहीं बनता
क्रेन-बुलडोजर-ट्रोलों
की आवाजाही
हमें नहीं चौंकाती
देर रात तक
डिस्को संगीत के साथ
पड़ौसी के खर्राटों की
जुगलबंदी चल जाती।
परन्तु आधी रात में
शहर की बस्ती में
अचानक कोई चिड़िया
आकर गाने लगे
तो हड़कम्प मच जाती है।
बेमौसम में बिना समय में
सुरीली आवाज भी
बेसुरी बन जाती है।
मैं स्वयं को फैलाते हुए
पहुंचा था
आधी रात को-किसी शहर में
और बरसों बाद
उम्र के ढलान पर आकर
अब कह चुका हूं
अलविदा शहर
मुझे नहीं सताता कोई भी डर
क्योंकि शहर छोड़ने से पहले
किसी ने मुझसे नहीं कहा-
थोड़ा और ठहर जा
शहर छोड़कर गांव मत जा।

अभिनंदनीय

रामूजी : गेस्ट कुक से बेस्ट कुक

आज तो कुकींग बड़ा प्रतिष्ठाजनक उद्योग बन गया है जो पूरे विश्व में सम्मान पाये है पर रामप्रसाद शर्मा जिन्हें सब 'रामूजी' कहते हैं, अपनी छोटी उम्र से ही अपना घर नेपाल छोड़ दिल्ली आ गये और कोटन मिल के मैनेजर संतोषकुमार शर्मा के घर रहकर सभी तरह का काम करने लग गये। जब संतोषकुमार जनरल मैनेजर बन उदयपुर कोटन मिल में आये तो रामू को भी कार में अपने साथ ले आये, उदयपुर घूमने, देखने।

रामूजी ने बताया कि मई 1992 में वे उदयपुर आये। सप्ताह भर यहां के दर्शनीय स्थल देखे। फिर संतोषबाबू ने उनकी चाहली। कहा, जाना चाहो तो संध्या को गाड़ी से भेज दूं और रहना चाहो तो मिल में गेस्ट कुक की जगह रहलो। रामूजी ने तत्काल यहीं रहने की हां भरी और नौकरी लग गई। चार साल बाद नौकरी पक्की हो गई। यहां 2005 तक गेस्ट हाउस चला।

मिल बंद होने से गेस्ट हाउस बंद हो गया पर इनकी और कुछ अन्यों की घर बैठे की नौकरी चलती रही। बिना काम तनख्वाह पकती रही। ठाले बैठे मन नहीं लगा सो भोजन बनाने का काम तलाशा। प्रतिदिन ही भोजन बनाने का सिलसिला शुरू हुआ जो आज तक थमने का नाम नहीं ले रहा।

रामूजी ने बताया कि मिल में अच्छे-बड़े लोगों की सेवा की। एक भी दिन ऐसा नहीं आया जब मेरे बनाये भोजन की प्रशंसा नहीं हुई। इससे साहब खुश, मेहमान खुश और जाते-जाते मेरी खुशी भी मेहमान बढ़ाते जाते। इससे नेपाल में मैंने

अपना घर बनाया। परिवार की खूब सेवा की और अमनचैन रहा।

जनवरी में जब अपने भानेज विकल्प का विवाह हुआ तो सप्ताहभर के लिए रामूजी ने पूरी रसोई संभाली। जो भी आया, रामूजी से मिला। इससे अब तक मेरे परिचितों-सगों के मंगल कार्यों पर ही रामूजी निमंत्रित हैं। भोजन के साथ-साथ इनका मृदुल व्यवहार, संयत वाणी और अपनत्व सबको परिवारिक सदस्य जैसा सम्मोहक बना गया।

रामूजी शुद्ध शाकाहारी भोजन बनाते हैं और उन्हीं के घरों में जाते हैं जो शुद्ध शाकाहारी बने हुए हैं। अकेले 150 व्यक्तियों तक को इन्होंने भोजन कराया है। इस कार्य में पन्द्रह-सौलह घंटा एकनिष्ठ कार्य करने में जरा भी संकोच नहीं कर संतुष्ट होते हैं।

सुबह नाश्ते से लेकर लंच, स्नेक्स, डीनर तक की जिम्मेदारी का बखूबी निर्वाह करते हैं। एकबार भोजन कम पड़ गया कारण जीमनेवाले ज्यादा आ गये थे। रामूजी को बड़ा अफसोस हुआ। उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि कारण कुछ भी रहे, मेरे हाथ का बनाया भोजन कम पड़ जाये तो मैं अपनी ही गल्ती मानता हूं। इसके बाद वे भगवान को भोग लगाकर ही जीमने के लिए कहते हैं। बोले, उसके बाद कभी भोजन कम नहीं पड़ा।

रामूजी ने बताया कि उदयपुर वाकई लाजवाब शहर है। मैं यहां रहने नहीं आया था पर इसने मुझे बांध लिया। मैं यहां बहुत खुश रहा। अब मैंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली है। नेपाल अपने गांव पांडेखोला जाकर परिवार के साथ, गांव वालों के साथ रहूंगा। यह गांव स्यांगजा जिले में है। यों पूरा नेपाल राजस्थान से भी छोटा है। आज यह देश तो गरीब है मगर वहां की जनता अमीर है। युवा लोग बाहर जा रहे हैं। अच्छा पढ़लिख ऊंची नौकरी ले रहे हैं।

रामूजी सदैव मुस्कान लिए कुकींग क्षेत्र में कर्मशील बने हुए हैं। कहते हैं, जन्मस्थान का ऋण चढ़ता है जिसे चुकाना चाहिये सो मेरे पास अब वह समय आ गया है। चाहता हूं अपने जन्मस्थान जाकर छोटा सा रेस्टोरेंट प्रारंभ करूं। इससे परिवारवालों के साथ-साथ गांववालों की सेवा का अवसर मिलेगा।

-डॉ. तुक्तक भानावत

दुर्लभ बीमारी से पीड़ित बच्ची का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने अति दुर्लभ बीमारी से ग्रसित रोगी का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि तीन वर्षीय पीपली, ऋषभदेव निवासी मोनिका पुत्री प्रकाश मीणा अति दुर्लभ बीमारी के साथ पैदा हुई थी। इसे मेडिकल भाषा में कन्जेनिटल पाउच कॉलोन नाम से जाना जाता है। यह बीमारी इतनी दुलर्भ है कि इंटरनेशनल ए आर एम क्लासिफिकेशन सिस्टम क्रिकेन्बेक क्लासिफिकेशन में इसे रेर वेरीयन्ट केटेगरी में रखा गया है। इस बीमारी में रोगी में नोर्मल मल द्वार का रास्ता न बनने के साथ-साथ बड़ी आंत का विकास भी ठीक ढंग से नहीं होता है। अग्रवाल ने बताया कि इतने दिनों से परेशान बच्ची के माता-पिता गत दिनों उसे लेकर पीआईएमएस आए। यहां पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. प्रवीण झंवर ने बच्ची की हालत को देखते हुए ऑपरेशन कर मल द्वार का रास्ता बना दिया। अब बच्ची नियमित फोलोअप में है और पूर्णत: स्वस्थ है। इस मामले में डॉ. प्रवीण झंवर का कहना है कि ऐसे बच्चों को लम्बी अवधि तक फोलोअप में रखा जाता है क्योंकि यह बीमारी ग्रोस एम्ब्रयोजेनेसिस के कारण होती है। अत: ऐसे बच्चों को भविष्य में पुन: देखभाल की जरूरत भी पड़ सकती है।

फेयर एण्ड लवली त्वचा के लिए संपूर्ण स्किनकेयर

उदयपुर। त्वचा का रंग काला पड़ने, मुंहासे, डार्क स्पॉट्स अथवा असमान स्किन टोन आदि समस्याओं से पीड़ित को अपनी त्वचा पर अतिरिक्त ध्यान देने की जरूरत है। त्वचा से संबंधित अधिकतर समस्याओं को मैनेज किया जा सकता है। जरूरत है तो एक्सपर्ट प्रॉडक्ट्स के सही संयोजन का चुनाव करने और एक उचित स्किनकेयर रूटीन अपनाने की।

फेयर एंड लवली एंटी-मार्क्स ट्रीटमेंट अपनी क्रांतिकारी धब्बे कम करने वाली सामग्री नियासिनामाइड के साथ त्वचा की तीन परतों तक जाता है और इन समस्याओं का जड़ से इलाज करता है। यह क्रीम न सिर्फ धब्बों को कम करती है, बल्कि उन्हें दोबारा होने से रोकती है। सूरज में जरूरत से ज्यादा रहने पर स्किन एजिंग और झुर्रियों के होने का खतरा कम करने के लिए फेयर एंड लवली एडवांस्ड मल्टी-विटामिन गर्मी को मात देने का परफेक्ट उत्पाद है। अच्छे मेकअप के लिए फेयर एंड लवली बीबी क्रीम का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस क्रीम में मल्टी विटामिंस हैं, जोकि अंदर जाकर काम करते हैं। नैचुरल फेयरनेस सॉल्यूशन के लिए फेयर एंड लवली आयुर्वेदिक केयर त्वचा को तरोताजा एवं गोरा करने के विभिन्न एजेंट से भरपूर यह आयुर्वेदिक केयर 16 प्राकृतिक सामग्रियों का पावर हाउस है। इसमें केसर, लोधरा, मंजीथा जैसी सामग्रियां हैं। लंबे समय तक गोरापन के लिए फेयर एंड लवली पाउडर क्रीम 14 घंटों तक गोरापन प्रदान करेगा।

एयर कूलर्स की नई रेंज लॉन्च

उदयपुर। सीके बिरला ग्रुप के हिस्से ओरिएंट इलेक्ट्रिक ने नए श्रेणी के एयर कूलर्स लांच किए हैं जो विभिन्न जरूरतों की पूर्ति करते हैं। ये कूलर्स 7 से 85 लीटर्स तक है। इसकी विशेषताओं में 2.7 वॉट की कम बिजली खपत, कूलिंग पैड्स में डेंस नेस्ट टेक्नोलॉजी, मच्छर प्रजनन विरोधी, किटाणु विरोधी क्षमता, धूल से बचाव और अपने सेगमेंट में सबसे अधिक हवा का प्रवाह शामिल है। ओरिएंट ने एयरटेक इंटरनेशनल के साथ महत्वपूर्ण समझौता किया है।

सौरभ बैसाखिया, सीनियर वीपी एवं बिजनेस हैड, होम एप्लाएंसेज बिजनेस, ओरिएंट इलेक्ट्रिक ने कहा कि कूलर की नई श्रृंखला उपभोक्ता की बदलती जरूरतों और कूलिंग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित की गई हैं।

सभी ओरिएंट कूलर्स आंतरिक रूप से परीक्षण की एक श्रृंखला से गुजरते हैं और एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ब्रिटेन आधारित प्रमाणन एजेंसी इंटरटेक द्वारा गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रदर्शन के लिए प्रमाणित हैं। ओरिएंट इलेक्ट्रिक एयर कूलर्स की नई रेंज में पर्सनल विंडो, टावर, डेजर्ट और स्लिम डेजर्ट एयर कूलर्स शामिल हैं।

लुमिनस के दो नए पंखे लॉन्च

उदयपुर। लुमिनस पॉवर टेक्नॉलॉजीज़ ने व्यापक ग्राहक वर्ग की विविध मांगों को पूरा करने के लिए अपना होम इलेक्ट्रिकल्स पोर्टफोलियो मजबूत करते हुए दो नए फैन पेश किए हैं। ये नए फैन डेल्टॉयड एवं ट्राईगोन हैं, जो लुमिनस के 2017 के डिज़ाईन फैन कलेक्शन को और ज्यादा आकर्षक बनाएंगे। ये दोनों फैन हाई स्पीड आउटपुट के साथ हाई एयर डिलीवरी परफॉर्मेंस की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं।

डेल्टॉयड जबरदस्त परफॉर्मेंस के साथ खासकर होम डेकोर को 'एक्स-फैक्टर' प्रदान करने के लिए डिज़ाईन किया गया है। यह फैन वाईन ग्लास स्टाईल की कैनोपी एवं कवर-डाउन रॉड के साथ प्रीमियम आधुनिक लुक प्रदान करता है। यह फैन विभिन्न रंगों जैसे एस्प्रेसो गोल्ड, मैग्नेट ग्रे, सिल्की व्हाईट एवं सिल्वर क्रोम में उपलब्ध है। इसका मूल्य 3040 रुपये है। ट्राईगोन सहजता के साथ खूबसूरती का जीवंत रूप है। इसके एयरोडाईनामिक तरीके से डिज़ाईन किए गए चौड़े ब्लेड ज्यादा एयर डिलीवरी एवं बेहतर एयर थ्रस्ट प्रदान करते हैं। इसके साथ इसकी शक्तिशाली मोटर काफी तेजी गति में घूमती है।

दुनिया में सबसे छोटे बच्चे की हार्ट सर्जरी

उदयपुर। मात्र 15 दिन की उम्र, केवल 470 ग्राम वजन, एक हथेली जितना छोटा बच्चा, हृदय की ऐसी गंभीर बीमारी जिसका अगर तुरंत इलाज न किया जाता तो नवजात मानो कुछ ही समय में दम तोड़ देता पर विपरीत हालात के चलते भी उसको जीवनदान मिला।

हृदय से निकलने वाली दो मुख्य धमनियों के जुड़े होने से दुनिया के मेडिकल इतिहास में पहली बार सबसे छोटे एवं कम वजनी बच्चे का ऑपरेशन कर निजात दिलाई है। यह जानकारी गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर के कार्डियक वेसक्यूलर एवं थोरेसिक सर्जन डॉ संजय गांधी ने प्रेसवार्ता में दी। उन्होंने बताया कि महज 470 ग्राम वजन के नवजात की यह सफल सर्जरी पूरी दुनिया में चिकित्सा इतिहास का प्रथम मामला है।

डॉ. गांधी ने बताया कि उदयपुर निवासी एस.पी. जैन व उनकी पत्नी ने वर्षों बाद आईवीएफ प्रक्रिया द्वारा संतान प्राप्त की। सातवें माह में जन्मे नवजात को पैदा होते ही सांस लेने में तकलीफ और फेफड़ों के सही से काम न कर पाने के कारण जीवंता हॉस्पिटल के नवजात गहन चिकित्सा इकाई में नियोनेटोलोजिस्ट डॉ सुनील जांगिड़ की देखरेख में वेंटीलेटर पर भर्ती किया गया।

गीतांजली हॉस्पिटल के कार्डियोलोजिस्ट डॉ रमेश पटेल द्वारा की गई एंजियोग्राफी जांच से पता चला कि नवजात के हृदय से निकलने वाली दो मुख्य धमनियां आपस में जुड़ी हुई है। यह धमनियां जब बच्चा मां के गर्भ में होता है तब तक जुड़ी रहती है जिससे बच्चा जीवित रह सके परन्तु जन्म के बाद यह धमनियां प्राकृतिक रुप से बंद हो जाती है। यदि किसी बच्चे की धमनियां प्राकृतिक रुप से बंद नहीं हो पाती है तो उसका उपचार दवाइयों द्वारा भी संभव है परन्तु इस मामले में दवाइयों से भी उपचार नहीं हो पा रहा था।

नवजात के फेफड़ों एवं हृदय में सूजन आ गई थी और फेफड़ों में आवश्यकता से अधिक रक्त प्रवाह हो रहा था जिससे वह सांस नहीं ले पा रहा था और उसे वेंटीलेटर द्वारा सांस दी जा रही थी। नवजात की धमनियां प्राकृतिक रुप से बंद नहीं हो पाई और दवाइयों द्वारा उपचार भी संभव नहीं हो सका। इस कारण ऑपरेशन ही एकमात्र विकल्प रह गया था।

परिजनों को विश्वास में लेकर गीतांजली हॉस्पिटल के कार्डियक सर्जन डॉ संजय गांधी जो पहले भी इस तरह की सर्जरी गीतांजली एवं जयपुर के कोकून हॉस्पिटल के नवजात गहन चिकित्सा इकाई में कर चुके थे को बुलाने का निर्णय लिया गया। नवजात की नाजुक हालत को ध्यान में रखते हुए गीतांजली हॉस्पिटल के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल ने तुरन्त अपनी कार्डियक टीम को जीवंता हॉस्पिटल भेजने का निर्णय लेकर सहयोग प्रदान किया जिसके तहत डॉ संजय गांधी, डॉ रमेश पटेल, डॉ अंकुर गांधी, डॉ कल्पेश मिस्त्री, डॉ मनमोहन जिंदल, डॉ धर्मचंद एवं समस्त ओटी स्टाफ हॉस्पिटल पहुंचे और नवजात गहन चिकित्सा इकाई में ऑपरेशन किया।

प्रोबायोटिक ड्रिंक याकूल्ट

उदयपुर। फंक्शनल फूड के क्षेत्र में, अपनी एक खास जगह बनाने वाले याकूल्ट डैनोन इंडिया प्रा. लि. ने विश्वस्तरीय प्रोबायोटिक ड्रिंक याकूल्ट

पर जानकारीपूर्ण सत्र का आयोजन किया। सत्र को याकूल्ट डैनोन इंडिया के प्रबंध निदेशक मिनोरु शिमादा और साइंस तथा रेग्युलेटरी अफेयर्स की महाप्रबंधक डॉ नीरजा हजेला ने कहा कि इस बात में कोई शक नहीं कि उपभोक्ता अनिश्चित और असक्रिय जीवनशैली, खराब पोषण और नींद की कमी के कारण जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों से जूझ रहे हैं। इसलिये, इस बढ़ते खतरे से लड़ने के लिये तत्काल ही उपाय तलाशने की जरूरत है। यह एक चौंकाने वाला तथ्य है कि हमारा सबसे बड़ा प्रतिरक्षा या इम्युन अंग आंत है। यह हमारी सेहत की स्थिति को तय करने में अहम मानी जाती है क्योंकि इसमें इंसानी शरीर की 70 प्रतिशत प्रतिरक्षा कोशिकायें मौजूद होती हैं। यह हमारी संपूर्ण इम्युनिटी को बेहतर बनाती है और हमें सुरक्षित रखती है।

डॉ. नीरजा हजेला ने कहा कि हालांकि, हम सभी अपने इन अंगों दिल, किडनी, लिवर आदि का ध्यान रखते हैं, लेकिन हम आंतों को नजरअंदाज कर देते हैं, जोकि हमारी इम्युनिटी को बेहतर बनाये रखने के लिये सबसे महत्वपूर्ण अंग माना गया है। डॉ. हजेला ने कहा कि हालिया अध्ययन यह दर्शाते हैं कि राजस्थान के शहरी क्षेत्र में रहने वाले लोग पाचन से जुड़ी परेशानियों से ग्रस्त रहते हैं और उनमें गंभीर बीमारियां जैसे उच्च रक्तचाप, डायबिटीज के अलावा स्वास्थ्य की अन्य समस्याएं होती हैं।

मिनोरु शिमाडा ने कहा कि हालांकि भारत परिवर्तन के शिखर पर है, आज के समय में स्वास्थ्य समस्याएं गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। वैश्विक रूप से बेहतर रूप में स्थापित, फंक्शनल फूड्स की अवधारणा स्वास्थ्य लाभ पहुंचाती है, इसके अलावा भारत में बुनियादी पोषण का महत्व बढ़ता जा रहा है। वर्ष 1935 में जापान में याकूल्ट की शुरुआत हुई थी। याकूल्ट के आने से जापान के उन लोगों की सेहत को बेहतर बनाने में यह काफी उपयोगी रहा, जो दस्त, पेचिश और संक्रमणकारी बीमारियों से जूझ रहे थे। वर्तमान में, 38 देशों और क्षेत्रों में प्रतिदिन याकूल्ट की 3.5 करोड़ बोतल का सेवन किया जाता है।

टाटा के नए बीएस फोर ट्रक लॉन्च

उदयपुर। देश की सबसे बड़ी ट्रक व बस विनिर्माता टाटा मोटर्स ने पांच नए बीएस फोर मानकों के अनुरूप मध्यम व भारी कमर्शियल वाहन (एमएचसीवी)

प्रदर्शित किए जो ईजीआर व एससीआर, दोनों तकनीकों से युक्त हैं। कंपनी ने एससीवी से लेकर एचसीवी तक व्यापक कमर्शियल रेंज हेतु, तकनीकी उपयुक्तता के मुताबिक, इन दोनों तकनीकों में दक्षता हासिल करते हुए भारत सरकार द्वारा संस्थापित व हाल ही में लागू किए उत्सर्जन मापदंडों को पूरा किया है। एससीआर टेक्नोलॉजी के साथ टाटा मोटर्स इस काबिल हो सकेगी की 'फ्यूचर रैडी' बीएस फोर अनुरूप उत्सर्जन समाधान विकसित कर सके जो कि 2020 में प्रभाव में आएंगे।

टाटा मोटर्स में मध्यम एवं भारी कमर्शियल वाहनों की प्रोडक्ट लाइन के प्रमुख गिरीश वाघ ने कहा कि बीएस फोर उत्सर्जन मानकों के पालन हेतु टाटा मोटर्स द्वारा 2012-13 में अपनाई गई ईजीआर टेक्नोलॉजी इंजन से नाइट्रोजन ऑक्साइड के उत्सर्जन को घटाने में सहायक है और टाटा मोटर्स की लघु से मध्यम रेंज को सशक्त करेगी, जिनमें 180एचपी तक की ताकत जरूरत वाले इंजन होंगे।

टाटा मोटर्स ने 2011-12 से एससीआर उत्सर्जन समाधान अपनाए हैं, यह टेक्नोलॉजी श्रेष्ठतम इंजन दहन तापमान को मुमकिन करती है जिससे ज्यादा शक्ति, परफॉरमेंस और ईंधन किफायत मिलती है तथा यह पार्टिक्युलेट मटर को घटाती है। एससीआर टेक्नोलॉजी टाटा मोटर्स के मध्यम से लेकर हैवी ड्यूटी रेंज तक को ताकत देगी जो टाटा क्युमिंस इंजनों पर आधारित हैं, जिनकी रेंज 160 एचपी से लेकर 400 एचपी तक है। ईजीआर अपेक्षाकृत कम लागत वाला, सरल और 'ईज़ी टू इंटिग्रेट' समाधान है तथा एससीआर को और आगे बढ़ा कर ज्यादा कड़े आगामी बीएस फोर उत्सर्जन मानकों को पूरा कर सकें जो 2020 में प्रभाव में आएंगे।

लोकसंस्कृति की....

(पृष्ठ एक का शेष)

संस्कृति के सरोकार समूहबद्ध और आंचलिक होकर ही प्राणवान बने रहते हैं। हमने उनका बाजारीकरण कर उसे अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज तो दिया पर उसकी पारंपरिक पहचान को खंड-खंड-विखंड कर बिचौलियों के हवाले कर दिया। इसका हश्र यह हुआ कि राजस्थान का तेरहताली नृत्य अब धर्म, अध्यात्म और उपासना का नृत्य नहीं रहा।

भवाइयों के विशिष्ट कला-कौशल और कुबद से उपजा भवाई नृत्य उनसे निकलकर शिक्षालयों का तमाशा बन गया। हमने कठपुतलियों का सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार तो पा लिया किंतु कठपुतली कलाकारों की बेघर बर्बादी को नहीं रोक पाये। रेगिस्तान के संगीत साधक लंगा तथा मांगणियारों को अपनी ढाणी से निकाल उनके संगीत से पूरे विश्व को चकित-छकित कर दिया किंतु संगीत के साथ बेवजह नृत्य का ठुमका देने वाले कलाकारों को नृत्यकार के रूप में प्रस्तुत कर लंगा नृत्य नाम देकर खिलवाड़ ही अधिक किया है।

इससे भी अधिक तमाशा लंगा को लंहगा नाम देकर किया और हमारे यहीं के दुभाषिये ने जब लंगा-लंहगा में कोई भेद नहीं समझा तो विदेशियों को लंहगा का अनुवाद पेटीकोट कर पेटीकोट डांस कह दिया। इससे विदेशी धरती पर तालियों की बौछार तो मिली मगर लगा जैसे हमने संस्कृति की विकृति ही नहीं की उस विकृति को भी विकृत कर दिया।

लोकदेवता पाबूजी की जीवनलीला का दरसाव देने वाले पड़ चित्राम अब उनके प्रति गहन आस्था, विश्वास और मान्यता के प्रतीक नहीं रहे। वे हवेलियों, बड़े होटलों और बड़े घरों के प्रसिद्ध सज्जा-प्रतीक बन गये। ग्रामीण जन समुदाय के समक्ष भोपे-भोपी द्वारा अब पड़-लीला का आख्यान गाया, बजाया, नाचा और अरथाया जाकर शुभ-मंगल की वर्षा नहीं करता।

यह बदलाव खानपान, पहनावा, आभूषण, संस्कार, सरोकार, भाषा, बोली आदि में समाविष्ट होता जा रहा है। अपने काज, हूनर और व्यवसाय के लिए प्रतिदिन अप-डाउन करने वाला 'अपडाउनिया' कहलाने में गर्व महसूस करने लगा है। रावण ने गुस्से में आकर जिस तरह पूरी मंडोवर नगरी ही उलट दी थी वैसे ही हमारे कलाबाज लोग इन कलाओं को उलट-पुलट करने में लगे हैं।

कला और संस्कृति के साथ दुर्भाग्य तब शुरू होता है जब लोग उसकी सार्वजनिकता का दोहन कर अपनी निज की पहचान देना प्रारंभ कर देते हैं। यह बहुत पुरानी बात नहीं है जब व्यक्ति अपने को अनाम करता हुआ समष्टि के लिए सर्वस्व हो जाता था और उसी को अपना सर्वस्व सुख कल्याण और संतोष मान बैठता था। हजारों गीत गाथाएं हरजस साक्षी हैं कि व्यष्टि के सब वैभव होते हुए भी लोग समष्टि के लिए सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय बने हैं।

यदि ऐसा नहीं होता तो मीरां के पदों की संख्या में दिन-दूनी वृद्धि नहीं होती। कबीर के भजन निरक्षरों की महफिल में रात्रि जागरण के तंदूरों पर भक्ति रस की तन्मयता और ताजगी देते नहीं मिलते। आज कहां मीरां लिख रही है? कहां कबीर लिख रहे हैं? चन्द्रसखी या कि अणदा रैदास लिख रहे हैं! पर कमाल है उनके नाम पर आज भी लिखे जा रहे हैं और आने वाले कल भी लिखे जाते रहेंगे।

एक तरफ वे लोग हैं जो इस अगम साहित्य, सहज संस्कृति और सुगम कला में अपना अनाम योग देते हुए बूंद को समुद्र बनाने में लगे हैं तो दूसरी ओर ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो लोककलाओं की खेती में असर-पसर गये हैं। कला और संस्कृति के साथ दुर्भाग्य तब शुरू होता है जब लोग उसकी सार्वजनिकता का दोहन कर अपनी निज की पहचान देना प्रारंभ कर देते हैं। हजारों गीत गाथाएं हरजस साक्षी हैं कि व्यष्टि के सब वैभव होते हुए भी लोग समष्टि के लिए सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय बने हैं।

यदि ऐसा नहीं होता तो मीरां के पदों की संख्या में दिन-दूनी वृद्धि नहीं होती। कबीर के भजन निरक्षरों की महफिल में रात्रि जागरण के तंदूरों पर भक्ति रस की तन्मयता और ताजगी देते नहीं मिलते। आज कहां मीरां लिख रही है? कहां कबीर लिख रहे हैं? चन्द्रसखी या कि अणदा रैदास लिख रहे हैं! पर कमाल है उनके नाम पर आज भी लिखे जा रहे हैं और आने वाले कल भी लिखे जाते रहेंगे।

दो दिन बालकवि.....

(पृष्ठ दो का शेष)

यदि आप कवि नहीं होते तो क्या होते? क्षण भर संभल बोले- हर मनुष्य के जीवन में कम से कम एकबार यह क्षण अवश्य ही आता है जबकि उसे स्वयं यह निर्णय लेना होता है कि वह क्या करे? इस निर्णय के क्षण को जो पकड़ले, वह वैसा ही होता चला जाता है। मैंने सही क्षण को समझ लिया और मैं वही होता चला गया जो कि आज आपके सामने हूं।

तब भी क्या आप नहीं मानते कि राजनीतिज्ञ को शुद्ध राजनीति और कवि को शुद्ध कविता करनी चाहिए? अपनी आवाज को थोड़ी उन्नत कर कहने लगे- साहित्य मेरा धर्म और राजनीति मेरा कर्म है। जो लोग इसके बीच में लक्ष्मण रेखा नहीं खींच सकते हैं वे प्राय:यहां-वहां लटकते रहते हैं। हमारे यहां साहित्य और राजनीति दोनों जगहों पर हाशिया बहुत चौड़ा और आंगन बड़ा विशाल है। आप चाहे इस तट पर रहें या उस तट पर, तट दोनों ही टूटे मिलेंगे। संसार में शुद्ध तो आग भी नहीं है। उसमें भी धुंआ निकल आता है। मैं साहित्य की ऊर्जा में राजनीति की रंगीनी मांड सकता हूं। जो आंसू का अर्थ समझ लेता है, वही आकाश भर हंस भी सकता है।

उनका यह कथन हममें गंभीर सन्नाटा दे गया। लगा जैसे उन्होंने हमें ही एक-एक चिंगारी की फुलझड़ी पकड़ा दी है। साहित्य के ज्वलंत होते सरोकारों की सन्निधि में कहां कोई बालकविजी के विशाल कविता-सिंधु में राजनीति की तरंग तलाश पायेगा। लगता है जीवन और साहित्य को सरसब्ज जीनेवालों को भी लोगों ने भ्रांतियों में डाल दिया।

- अगले अंक में समाप्त

'भाषा' शब्द मात्र नहीं

-डॉ. मालती शर्मा

भाषा केवल शब्द नहीं
सामाजिक व्यवस्था है
मानवमन के व्यवहारों की व्याख्या है।
व्याख्याओं के अर्थों का विस्तार है
प्रेम, दया, ममता, करुणा,
घृणा, बैर, हिंसा, आतंक बेरुखी
दो अक्षरों के शब्द मात्र नहीं
जीवन का उपवन हैं
पतझड़ वसंत हैं
निर्माण और ध्वंस हैं।
भाषा अपनी आकृति की,
लिखावट की, छोटी-बड़ी
आड़ी खड़ी-पड़ी रेखाओं में
ऊँ आ की ध्वनियों में
पूरा विश्व है।
एक शब्द घूंघट सहेजे
सदियों का इतिहास है।
भाषा के बिना नहीं है
विश्व का अस्तित्व।

ऐंडीबेंडी कविता

अखबार बहाना है मन बहलाने का

आज अखबार देर से आया।
तू जल्दी लायाकर भाया।।
टेम पर अखबार आने से, चाय में गर्माहट बनी रहती है।
नहीं तो बीबी की नाक, तनी की तनी रहती है।।
दिन भर एक्सीलेंट एक्सीडेंट का दौर चला रहता है।
मेरा नाम नाली में पड़े रोटी के टुकड़े सा गला रहता है।।
मैं चाय से अखबार का संबंध टटोलने लगता हूं।
जैसे दैत्यमगरी से बंधा भूत खोलने लगता हूं।।
जिस दिन अखबार में अवकाश रहता है।
मेरे घर में साक्षात भूतनी का वास रहता है।।
लगता है बिना अखबार ही मैं समाचार पढ़ रहा हूं।
अपना छोटा सा टैंक लिए लोडिंग ट्रक पर चढ़ रहा हूं।।
जहां भी जाऊं अखबार सबका सहारा है।
बिना उसके जीवन मुसीबत का मारा है।।
अखबार तकिया और बिछोना है।
आंसुओं का पौंछा और छिपने का कोना है।।
अखबार बहाना है मन बहलाने का।
मौन बनी महफिल में जिन्दा कहलाने का।।

तीन त्रिभुजी

(एक)

वह जब तक रहा हेंकड़ी में रहा
मित्रों परिजनों सबके लिए
यह समझता रहा कि
मेरा दबदबा कायम है
कितने भ्रम में थे तुम
सैंकड़ी क्या
एक कड़ी भी नहीं जोड़ पाये।

(दो)

तुम प्रसन्न थे कि
तुमने नकली सिक्का चला दिया
समझ तुम्हारी है।
मेरी समझ में
जो प्रसन्न हुआ
वह तुम्हारा असली चेहरा नहीं, मुखौटा था
सच दबता नहीं है
झूठ को दबाये रखना पड़ता है।

(तीन)

कीड़ी एकलखोरी नहीं है
पूरा नगर उसका परिवार है
अनेकों कण होते हुए भी
उसे एक कण चाहिये
शेष के लिए सबको न्यौता देती है
कोयल आम की मंजरियों में
कुहुक भर
सारी वनराई सुगंधा देती है
तभी आम फलते हैं।

डॉ. भानावत की प्रकाशनाधीन नई कृति

जैन लोक का पारदर्शी मन

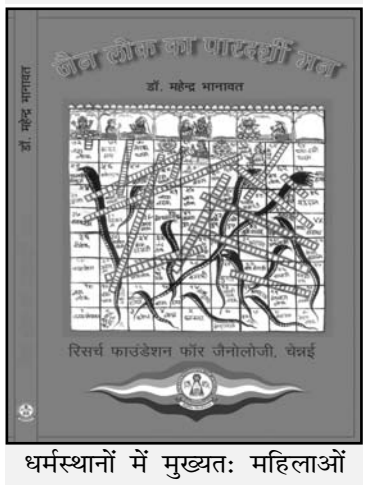

धर्मस्थानों में मुख्यत: महिलाओं में प्रचलित श्रुत-साहित्य का पहलीबार प्रकाशन। पारम्परिक कंठासीन साहित्य की विविध विधाओं में गरभ चिंतारणियां, थोकड़े, स्तुतियां, चौबीसियां, पखी गीत, तपस्या गीत, साधु-साध्वियों के आगमन तथा विदाईपरक गीत, तीर्थंकरों से जड़े मंगल गीत, देशी संगीत, संथारा आदि पर सम्यक विवेचन।

भारतीय संविधान और राष्ट्रभाषा की चाहत

भारतीय संविधान निर्मात्री परिषद में एक बार पं. जवाहरलाल नेहरु और सरदार वल्लभभाई पटेल के बीच राष्ट्रभाषा को लेकर मतभेद चला। पंडितजी हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे जबकि सरदार पटेल हिन्दी के लिए दृढ़ संकल्पित थे। इस बहस में मैं भी सरदार पटेल की तरफ था।

इस वक्त सरकार न तो ऑफ दी पीप्रल की है न फॉर दी पीप्रल की। केवल बाई दी पीप्रल की है। यह बाई दी पीप्रल आधा है कारण कि जनता से जो प्रतिनिधि चुनकर जाता है उसे रि-काल करने का अधिकार जनता के पास नहीं, जो होना चाहिये। हमारा संविधान आज केवल लिखावट में रह गया है। उसके अनुसार यह देश चलने की कोशिश करता तो वस्तुत: सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा होता।

- बलवंतसिंह मेहता

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

कान्यो-मान्यो

कानोड़ मांय तैसील रो उमावो

अरे कान्या थूं कठे कान मांय तेल डाल सूतोर्‌यो। अठे तीन कम तीस दनां तांई सगळा मनक लुगायां तैसील री मांग करता र्‌या। धरणो दीधो। मशाल जलूस काड्‌यो। भूखा बैठा। उदेपर जैपर रो दोड़ो कीधो। खास बात या री कै कानोड़ रे भायां रे साथे बैनां बरोबर बल्के एक वेंत आगे री। आं-पां रा लोग भी घणो साथ दीधो पण थें फरकी तक नी जोई।

कान्यो कान पकड़ दस उठक बैठक कीधी ने बोल्यो के भाइला म्हनै मांदगी घेर लीधी। ओखद ने इलाज खातर बारे जाणो पड्‌यो। मान्या रा गळा माथे हाथ मेल बोल्यो जो भी सजा दे, भुगतण ने हाजर हूं। मान्यो सानुभूति में ढबग्यो। नमग्यो। आंख्यां भर आई।

बुचकारतो थको बोल्यो के तीस बरसाऊं तैसील तैसील री टैं-टैं करतां जबान घसगी। आश्वासनां रा घणाई लापसी-पूड़ी रा जीमण जीम्या पण कागद कोरो रो कोरो र्‌यो। जदी ठाण लीधो के अबकी दाण या तो अणी पार या वणी पार। यो पेली दाण व्यो के सगळा एक मन एक पिराण वेइने उबाल देता र्‌या। भीण्डर तैसील वेइगी ने कानोड़ लटकती रेइगी।

कान्यो बोल्यो जदीज अतरो उबाल खलबल्यो। विधायकजी फरकी नी जोई। आपणी घोड़ी छायां बांध सूता र्‌या अर थें सब तपती लाय में सिकाता र्‌या। चालो सबर रो फल मीठो मल्यो। मान्यो धीरे सूं बोल्यो के विधायकजी बळता तवा माथे आपणी रोटी सेकी। धरणा माथै आय तैसील री घोषणा कीधी। बोल्या के प्रस्ताव दोई जगां रो भेज्यो। पैरवी भी कीधी। कान्यो बात काट बोल्यो जदी भैं पाणी में क्यूं बैठी। भीण्डर ने कानोड़ री खबर लावता नीं तो जैपर मांय धरणो घाल बैठ जाता।

मान्यो बोल्यो जन प्रतिनिधि राजनीति रा रंग में नी रंगे तो काम नी चाले। जीत्यां पछै रंगा सियार बण अर जनता भीगी बिल्ली बन जावे। कान्यो बोल्यो जो व्यो वो घणो आछो। मेवाड़ मांय कानोड़ रो पाणी जगां-जगां आपणी पिछाण दीधी। अठे तेरा सुतंतरता सेनाणी व्या। खुल्लमखुल्ला जोधा व्या। अठा री जड़ेली विदेसां मांय भी आपणो कमाल कीधो है। अबै शान्ति सूं बैठो। धमाल छेटी मेलो। विधायकजी ने केदो के सांचा व्हो तो 'भीण्डर' री जग्यां 'कानोड़ भीण्डर' बोलो।

पीछोला झील को बेस्ट नेचुरल अट्रैक्शन अवार्ड

उदयपुर। दक्षिणी राजस्थान की जग प्रसिद्ध उदयपुर की पीछोला झील को राष्ट्रीय स्तर पर बेस्ट नेचुरल अट्रैक्शन का अवार्ड दिया गया है। राजस्थान की ओर से यह अवार्ड राजस्थान पर्यटन स्वागत केंद्र की अतिरिक्त निदेशक श्रीमती डॉ. गुनजीत कौर और सहायक निदेशक आर. के. सैनी ने ग्रहण किया। नई दिल्ली के होटल ताज मानसिंह में आयोजित पर्यटन सम्मान समारोह में प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्यमंत्री जितेन्द्रसिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अवार्ड कार्यक्रम में पीछोला झील को भारत का 'फेवरेट नेचुरल अट्रेक्शन हॉली डे आईक्यू अवार्ड' पुरस्कार प्रदान किया गया। समारोह का आयोजन हॉली डे आईक्यू संस्था द्वारा किया गया। इस मौके पर पर्यटन उद्योग व व्यवसाय, मीडिया और प्रशासनिक जगत की जानी मानी हस्तियां मौजूद थी।

जिला कलक्टर बिष्णुचरण ने कार्यभार संभाला

उदयपुर। उदयपुर के नये जिला कलक्टर बिष्णुचरण मल्लिक ने पदभार ग्रहण कर लिया। कार्यभार ग्रहण के दौरान शहर के प्रमुख लोगों व अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। पत्रकारों से बातचीत में मल्लिक ने कहा कि जनता की समस्याओं के जितने भी प्रकरण सामने आएंगे उनको प्राथमिकता के साथ जल्दी निस्तारित करेंगे। राज्य सरकार की जो भी योजनाएं हैं उनका बेहतर तरीके से लाभान्वितों को लाभ दिलाया जाएगा। इसके अलावा टाइम लाइन का पूरा ध्यान रखा जाएगा।

एमजी कॉलेज में छात्राओं को मिली 53 स्कूटियां

उदयपुर। राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय में मुख्यमंत्री मेधावी छात्रा एवं देवनारायण स्कूटी वितरण योजना के अन्तर्गत 53 स्कूटियां वितरित की गई। इसमें राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय की 34, विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर की 7, वाणिज्य महाविद्यालय की 1, राजकीय महाविद्यालय, सलूम्बर की 5, राजकीय महाविद्यालय, झाड़ोल की 2 एवं राजकीय कन्या महाविद्यालय, खेरवाड़ा की 1 स्कूटी शामिल हैं।

मुख्य अतिथि नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने इस महत्वाकांक्षी योजना को समाज हित में रेखांकित किया एवं अधिक से अधिक छात्राओं को लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रभारी डॉ. बी.एस. मण्डोवरा ने योजना के उद्धेश्य एवं लाभ लेने की पात्रता के बारे में बताया। प्राचार्य डॉ. रामेश्वर आमेटा ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. रामसिंह भाटी ने किया।

100 बेडेड ईएसआई अस्पताल का शिलान्यास

उदयपुर। केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार राज्य मंत्री बंगारू दत्तात्रेय ने उदयपुर के चित्रकूटनगर (भुवाणा) में 80 करोड़ रुपये लागत से बनने वाले कर्मचारी बीमा निगम के 100 बेडेड अस्पताल का शिलान्यास किया।

उन्होंने कहा कि श्रमिक कल्याण के क्षेत्र में सरकार कर्मचारी राज्य बीमा की सेवाओं का लाभ 393 जिलों से विस्तारित करते हुए सभी 687 जिलों में संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को लाभ पहुंचाने के प्रभावी प्रयास किये जा रहे हैं। राजस्थान में सभी 33 जिले इस योजना के तहत लाभान्वित हो रहे हैं। भारत में करीब 12.2 करोड़ लोगों को इस योजना का लाभ मिल रहा है।

इस अवसर पर श्री दत्तात्रेय ने कोटा व जोधपुर के 50-50 एवं भीलवाड़ा के 60 बेडेड ईएसआई हॉस्पिटल को 100 बैडेड करने की घोषणा की। श्रमिक वर्ग के बच्चों को भी चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए अलवर में मेडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा करते हुए केन्द्रीय श्रम मंत्री ने कहा कि इससे श्रमिकों के बच्चों को श्रेष्ठ अवसर मिलेंगे। कैशलेस ट्रांजेक्शन का लाभ दिलाने के तहत कर्मचारी राज्य बीमा विभाग की ओर से विगत मार्च माह तक 70 लाख श्रमिकों के नए खाते खुलवाए गए हैं।

गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि शासन की ओर से आमजन के प्रति संवेदनशीलतापूर्ण सेवाओं को जनता सदैव याद रखती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं के बेहतरीन क्रियान्वयन से कृषक एवं गरीब वर्ग के उत्थान की आवश्यकता जताई और कृषक वर्ग के लिए विशेष पैकेज की जरूरत बताई।

समारोह को राजस्थान के श्रम एवं रोजगार मंत्री जसवन्तसिंह यादव, सांसद अर्जुनलाल मीणा, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने भी संबोधित किया। स्वागत उद्‌बोधन कर्मचारी राज्य बीमा निगम की द्वितीय आयुक्त श्रीमती संध्या शुक्ला ने दिया। आरंभ में अतिथियों ने विधिवत वैदिक मंत्रोच्चार से पूजन कर अस्पताल की नींव रखी। इस अवसर पर महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, बड़गांव प्रधान खूबीलाल पालीवाल, भुवाणा सरपंच श्रीमती संगीता चित्तौड़ा सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं श्रमिक संगठनों के पदाधिकारीगण मौजूद थे।

'स्वच्छ जल सबका हक' अभियान का आगाज

उदयपुर। आर के मार्बल के अंग वंडर सीमेंट ने आज अपने वार्षिक अभियान 'स्वच्छ जल सबका हक' की शुरुआत की। यह अभियान राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के 46 शहरों में चलाया जायेगा। इसके लिए 52 वैन तैयार की गई है जो 30 दिनों तक बारी-बारी से 46 शहरों के 16 लाख लोगों को 10 लाख लीटर स्वच्छ जल उपलब्ध कराएगी। 'स्वच्छ जल सबका हक' के तहत हर तबके, हर वर्ग, मजदूरों, बच्चों, बूढों को साल के सबसे गर्म मौसम में स्वच्छ और ठंडा जल उपलब्ध कराया जाएगा। ये सभी 52 वैन्स शहर के लोकप्रिय और जाने-पहचाने स्थान पर खड़ी की जाएंगी।

मंगलवार को उदयपुर में फतहपुरा स्थित वंडर सीमेंट कार्यालय से इस अभियान की वैन रवाना की गई। वैन को नगर विकास प्रन्यास चैयरमेन रवीन्द्र श्रीमाली, वंडर सीमेंट लि. के निदेशक परमानंद पाटीदार और प्रेसिडेंट मार्केटिंग शैलेष मोहता ने झंडी दिखाकर रवाना किया।

वंडर सीमेंट लि. के निदेशक विवेक पाटनी ने कहा कि जल बहुमूल्य मद है और गर्मियों के मौसम में इसकी भारी कमी हो जाती है, विशेषकर सार्वजनिक स्थानों पर जहां लोगों को इसकी सबसे अधिक जरूरत महसूस होती है। इस स्थिति को बेहतर करने के लिए और लोगों को ऐसे स्थानों पर पेयजल उपलब्ध कराने के लिए हमने इस दिशा में 'स्वच्छ जल सबका हक' अभियान की शुरुआत 2014 में की थी। विगत वर्ष हमने 40,000 कि.मी. क्षेत्र में लोगों को 4 लाख लीटर स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया था। इस वर्ष हम इसे और बड़े स्तर पर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं ताकि अधिक से अधिक लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जा सके। वंडर सीमेंट ने वर्ष 2014 में उदयपुर जिले के 15 स्थलों जैसे अस्पतालों, निर्माण स्थलों, बस स्टैंड पर लोगों को पेयजल सुविधा उपलब्ध कराई थी। इस कार्यक्रम की लोकप्रियता को देखते हुए 'स्वच्छ जल सबका हक' कार्यक्रम का विस्तार अब चार राज्यों के 46 शहरों में किया गया है।

उल्लेखनीय है कि वंडर सीमेंट, सीमेंट के क्षेत्र में अग्रणीय नाम है जो राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड राज्यों में उपलब्ध है। कंपनी कि स्थापना 2010 में हुई थी और इसका मुख्यालय उदयपुर राजस्थान में स्थित है। वंडर सीमेंट लि. अपने उच्च स्तरीय उत्पादों के लिए विख्यात है जो अपनी मूल कंपनी आर.के.मार्बल, जिसकी मार्बल की दुनिया में अपनी एक खास पहचान है, की समृद्ध विरासत को आगे बढ़ा रही है। कंपनी का प्लांट चित्तौड़गढ़ में स्थित है जहां प्रतिवर्ष 6.75 मिलियन टन सीमेंट का उत्पादन होता है जिसके चलते उद्योग जगत में इसकी एक विशेष पहचान है। यह सुनिश्चित करने के विशेष प्रयास किए जाते हैं कि प्लांट नवीनतम पर्यावरण मानकों के अनुरूप हो। रिवर्स एयर बैग हाउस, ईएसपी और कई प्रकार के बैग फिल्टरों की सहायता से प्लांट को साफ और धूलरहित रखा जाता है। जर्मनी की थाइसनक्रुप और फायर लि. के तकनीकी सहयोग के साथ इस प्लांट कि स्थापना की गई हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।